मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५९ • अक्टूबर-२०२०

केसर स्नान

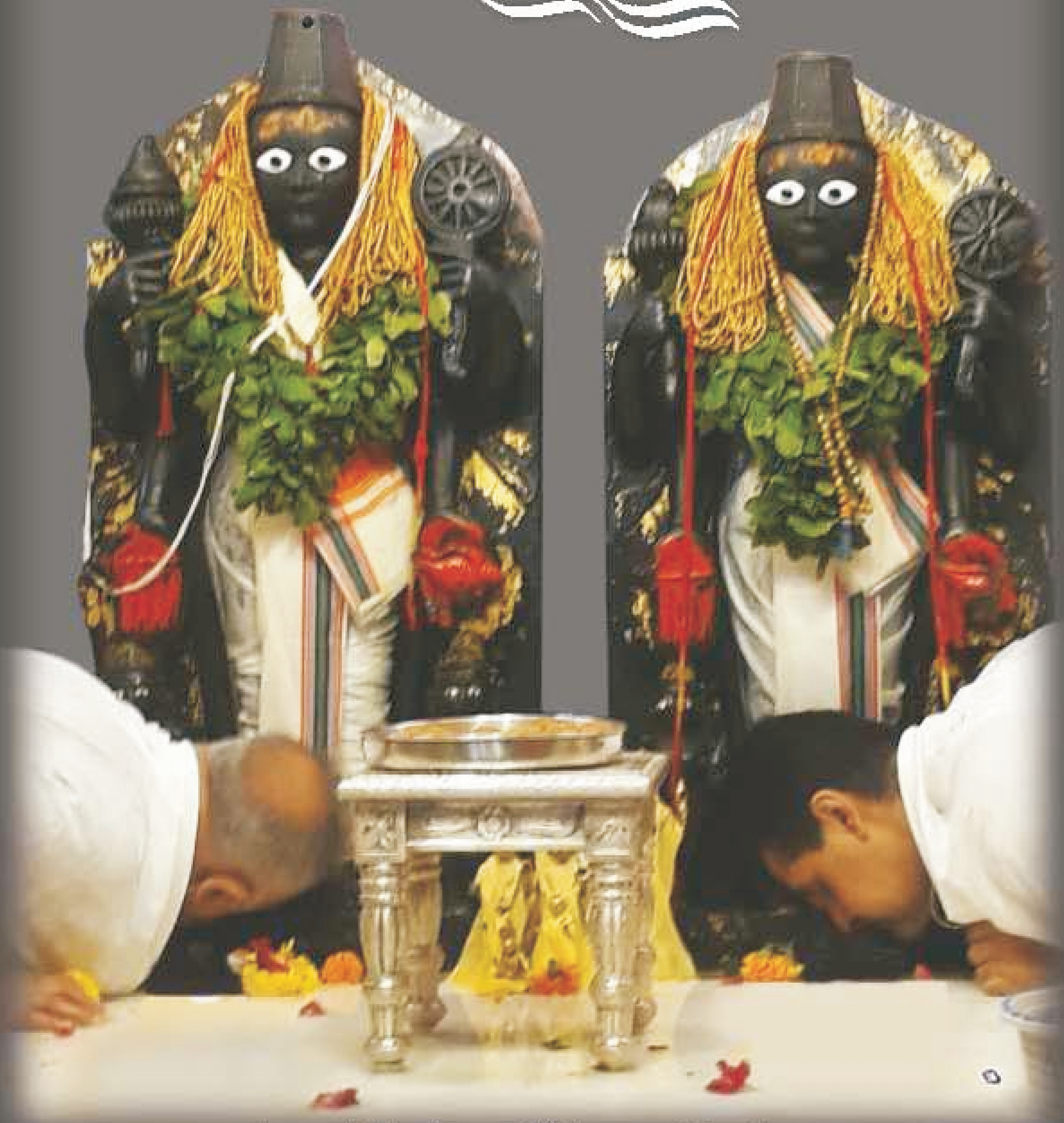

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

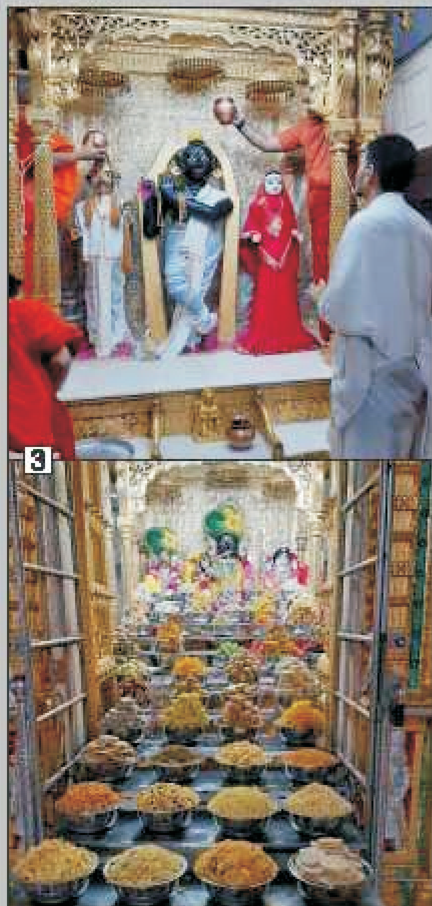

(१) अधिक मास में कालुपुर मंदिर, रंगमहोल में श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए पू. महंत स्वामी तथा रंगमहोल और अक्षर भुवन घनश्याम महाराज के अन्नकूट दर्शन। (२) सम्प्रदाय के सर्वोपरी तीर्थ छपैया में अधिकमास पाटोत्सव अवसर पर श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन। (३) मूली मंदिर में अधिक मास पाटोत्सव प्रसंग पर श्री राधाकृष्ण देव हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन। (४) कांकरिया मंदिर में अधिक मास के निमित्त आयोजित समूह महापूजा का लाभ लेते हरिभक्त।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १४ • अंक : १५९
अक्टूबर-२०२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युंजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail: manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष १०-०० • प्रति कॉपी १-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	हे हरि आप में हमारा चित्त लगा रहे	०६
०४.	मुक्तानंद स्वामी के मन की बात	०८
०५.	स.गु. मुक्तानंद स्वामी का अनन्य आश्रय	१०
०६.	गायें ताली बजाकर, मिलकर गाये	१३
०७.	भगवान का सम्बन्धकिसे कहे	१६
०८.	श्रीहरिचरित्र चिंतामणी - ग्रंथ परिचय	१७
०९.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१८
१०.	सत्संग बालवाटिका	२०
११.	भक्ति सुधा	२२
१२.	सत्संग समाचार	२५

अस्मदीयम्

भगवान श्री स्वामिनारायणने मनुष्य जीवन के तीन स्तम्भ बताये है। सत्व, रज और तम, तमोगुण से मानवता और मनुष्य जीवन का अन्त होता है। जब कि रजोगुण से मनुष्य दुखी और परेशान होता रहता है। सत्व गुण से जीव मात्र को सुख-शांति और समृद्धि से पूर्ण आनन्दमय जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त होता है। यह सात्विकता या सत्वगुण जहाँ पर स्वच्छता पवित्रता और शुद्धता जिसमें होती है वहाँ पर रहती है। यदि हमे अपने जीवन में सतोगुण लाना हो तो सर्व प्रथम स्वच्छता रखना आवश्यकहै। इसको अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने मुख से श्री शिक्षापत्री में सभी के लिये आज्ञा किये है कि स्थानेषु लोकशास्त्राभ्याम् निषिधेषुं कदाचन। मलमूलोत्सर्जनं च न कार्य ष्ठीवनं तथा ॥३३॥ ऐसी जगह जहाँ शास्त्र मना करता हो, जिस स्थान का प्रयोग मनुष्य अधिक करता हो, बाग-बगीचा, सुन्दर बोये गये खेत, वहाँ पर मलमूत्र का त्याग नही करना चाहिए। उससे गंदगी फैलती है। कई प्रकार के रोग फैलने की पूरी सम्भावना होती है। श्रीजी महाराजजी के इस आदेश का पालन पूरे विश्व में हो तो आज के दिन फैली महामारी जैसे रोगो से रक्षा प्राप्त होती। इसमें कोई शंका ही नही है। यह भी हमारा एक परम धर्म है। जिसका पालन हम सभी को करना अनिवार्य है। इस लिये हम सभी को सावधानी पूर्वक अपना व्यवहार-आचरण स्वच्छता को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इस तरह की बुद्धि परमेश्वर भगवान श्री नरनारायणदेव सभी को दे। ऐसी प्रार्थना उनके श्रीचरणो में करता हूँ। यही आज के दिन की शुभकामना के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

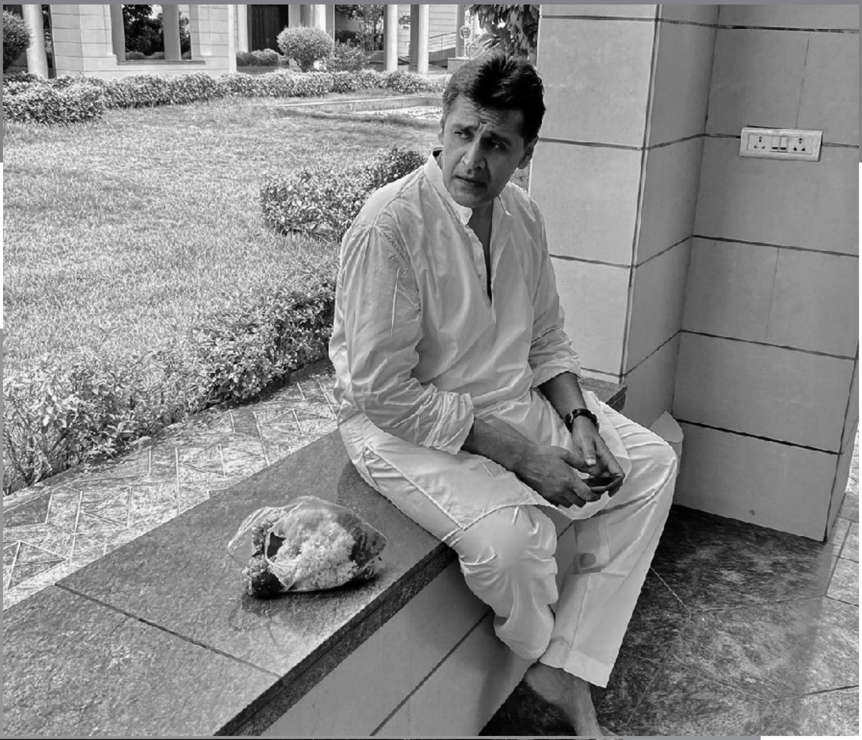

हे हरि आप में हमारा चित्त लगा रहे

- महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर, अमदावाद)

॥ अष्टपदीयम् ॥

त्वयितुहरेचेतोरमताम्।(ध्रुवपदम्)
नीलेवपुषिवसनानिसितानी । दधे धवे तत्र जगताम् ॥त्वयितु... ॥१॥
विधिभववन्दितचरणसरोजे । वरवृषांगेऽपिवदताम् ॥त्वयितु... ॥२॥
सदसिसाधूनामकृत यो मानम्।मदहर वाक्यैर्मधुरसताम्॥त्वयितु...॥३॥
मुक्तापुष्पवरहारसुकण्ठे । कृतभवदूरेभजताम् ॥त्वयितु... ॥४॥
तिष्ठतुतत्रयदाघपदंनः । हृदिसुखसद्मनिभवताम् ॥त्वयितु... ॥५॥
पृथुलललाटविराजितचन्द्रे । महीयसिधीमतिमहताम् ॥त्वयितु... ॥६॥
विकचितशोणकमलदलदृष्टे । द्विरदगतौगतौहसताम् ॥त्वयितु... ॥७॥
वदनशशिहृत्तमोभूरिहस्ते । सखेतत्रयस्त्वरंहरताम् ॥त्वयितु... ॥८॥
वासुदेवभणितमेतदर्च्यम् । नृणांश्रवणसोरसंनयताम् ॥त्वयितु... ॥९॥

॥ इति वासुदेवानंदवर्णी विरचिताष्टपदी ॥

भगवान के भक्त का अपने आराध्यदेव की मूर्ति में कैसा प्रेम होता है। यदि उसे ज्ञान करना हो तो सदगुरु श्री वासुदेवानंद वर्णी द्वारा रचित स्तोत्र उनके द्वारा की गयी प्रार्थना को समझना पडेगा। उनके हृदय में जैसी प्रेम युक्त भक्ति आये तो तभी परमात्मा के मूर्ति का महत्व समझ में आयेगा। विना महत्व के समझे हृदय में धारण करना कठिन कार्य है। इस कारण वर्णीराज श्रीहरि के पास से ऐसी सदैव याचना करते है कि उनके हृदय पटल पर आपकी मूर्ति बनी रहे। ऐसे ही अर्थ की अभिव्यक्ति करने धारण हेतु इस अष्टक स्तोत्र का अर्थ समझना चाहिए।

त्वयितुहरेचेतोरमताम्।(ध्रुवपदम्)
नीलेवपुषिवसनानिसितानी।
दधे धवे तत्र जगताम् ॥त्वयितु... ॥१॥

हे श्रीहरि आप की यह सुंदर दिव्य मूर्ति हमारे चित्त में हमेशा बनी रहे। और अन्य नाशवन्त माया वाले पदार्थो में न फँसे। ऐसी कृपा दृष्टि आप हमारे उपर बनाये रखे। आपकी मूर्ति कितनी सुंदर और मनमोहक है। जिसे संसार साक्षात रुप से देख सकता है। मनुष्य रुप धारण करके दर्शन देते है। आप की श्याम सुंदर नवीन मेघ के समान वर्णवाली मूर्ति सफेद मनोहर वस्त्रो में ऐसी सुंदर लगती है कि सम्पूर्ण संसार की सुंदरता इसमें व्याप्त हो। ऐसे आप के दिव्य स्वरुप में मेरा मन सदैव लगा रहे। ऐसी कृपा की वर्षा आप की हमारे उपर बनी रहे।(१)

विधिभववन्दितचरणसरोजे।
वरवृषांगेऽपिवदताम् ॥त्वयितु... ॥२॥

हे श्रीहरि आप के कमल जैसे कोमल और दयालु चरण अरविंद का बडे-बडे देवता, साक्षात् पितामह ब्रह्माजी देवो के देव महादेव और समस्त देवताओ के समुदाय सदैव वंदन करते है। और आप के कलमवत मुख से निकला श्रेष्ठ धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, का पोषण करने वाले दिव्य वचन तथा आज्ञा पालन के लिये सदैव तैयार रहते है। ऐसे आप के दिव्य रुप में हमारा मन सदैव लगा रहे। ऐसी कृपा आपकी बनी रहें। (२)

सदसिसाधूनामकृत यो मानम्।
मदहर वाक्यैर्मधुरसताम् ।।त्वयितु... ।।३।।

इस समय कलियुग में मानव शरीर धारण करके विचरण करते है । तब पाँच सौ परमहंसो की सभा में कोई साधारण साधु भी आता है तो उसे आप सन्मान देते है । उसके हृदय में परमात्मा के दिव्य स्वरुप का दृढ निश्चय कराते है। अमृत के समान मधुर वाणी से मद और अहंकार दूर कर देते है । उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश कर देते है । ऐसे आप के दिव्य स्वरुप का हमारे मन में सदैव वास रहे। ऐसी कृपा आप की बनी रहे।(३)

मुक्तापुष्पवरहारसुकण्ठे।
कृतभवदूरेभजताम् ।।त्वयितु... ।।४।।

उत्तम मोतियो की माला और सुगंधित रंग बिरंगे फूलो के हार आपके श्रेष्ठ कंठ में शोभा दे रहे है। जिसका दर्शन कर लेने वाला व्यक्ति भजन करने वाला व्यक्ति, तथा सहारा लेने वाला व्यक्ति दुःखो कष्टो के भवसागर से दूर हो जाता है । ऐसे दिव्य रुप में सदैव हमारे मन में आप विराजमान रहे । ऐसी कृपा आप की हमारे उपर बनी रहे।(४)

तिष्ठतुतत्रयदाघपदंनः।
हृदिसुखसद्मानिभवताम् ।।त्वयितु... ।।५।।

हे श्रीहरि आप के चरणारविंद जहाँ पर भी पडते है। वहाँ पर सर्व प्रकार के पापो का तत्काल क्षय हो जाता है। ऐसे आप के चरण कमल में मेरा चित्त सदैव लगा रहे। ऐसी कृपा करे कि जिससे मेरे हृदयमें अविनाशी अक्षरधाम के महान सुख के आनंद का सागर हिलोरे ले। आप की मूर्ति के सिवाय कोई अवलम्ब नही है । ऐसे आप के दिव्य रुप की छाया हमारे मन में सदैव बनी रहे। तथा आप की कृपा की वर्षा होती रहे।(५)

पृथुललाटविराजितचन्द्रे।
महीयसिधीमतिमहताम् ।।त्वयितु... ।।६।।

हे श्रीहरि आप के विशाल ललाट उदारता और दयालुता के प्रतीक है। जिस में सुंदर उर्ध्वपुन्ड्र तिलक, कुमकुम का तिलक शोभित हो रहा है । महान और विलक्षण बुद्धिमान विद्वानो की मति-बुद्धि महानता उसमें है। जो लोग आप के दिव्य स्वरुप के साथ जुडे रहते है । उनका आप अवश्य आन्तयिक कल्याण तथा मोक्ष करते है। ऐसे आप के दिव्य रुप में हमारा मन सदैव लगा रहे। ऐसी आप की कृपा की वर्षा होती रहे।(६)

विकचितशोणकमलदलदृष्टे।
द्विरदगतौगतौहसताम् ।।त्वयितु... ।।७।।

संसार के अनंत जीवो के कल्याणहेतु मानव रुप धारण करके पृथ्वी के उपर विचरण कर रहे है। जिस प्रकार बड़े तालाब में सूर्योदय होने पर विशाल कमल खिल उठते है । वैसी कोमल दृष्टि से सभी जीवो पर करुणा कते है। इससे उनके सभी दुःखो का नाश होता है। उनके दुःख को दूर करके मंद मंद गति से जीवो का कल्याण करते है। ऐसा आप के दिव्य स्वरुप में मेरा मन लगा रहे। ऐसी कृपा आप की बनी रहे।(७)

वदनशशिहृत्तमोभूरिहस्ते।
सखेतत्रयस्त्वरंहरताम् ।।त्वयितु... ।।८।।

हे श्रीहरि आप के मुखकमल में चंद्र जैसी शीतलता है । जो जीवो के हृदय में से अनादिकाल से व्याप्त अज्ञान रुपी अंधकार को आप दूर करते है। हे हरि ऐसा अपना करकमल मेरे सिर पर रखकर व्याप्त अज्ञान तथा तम को दूर करे । ऐसे आप के दिव्य स्वरुप का श्वेत हमशा मन में बना रहे । ऐसी आप की कृपा सदैव बनी रहे।(८)

वासुदेवभणितमेतदर्च्यम्।
नृणांश्रवणसोरसंनयताम् ।।त्वयितु... ।।९।।

हे श्रीहरि आप के वासुदेव वर्णी जो कहते है । उस अनुसार आप के स्वरुप की वंदना, स्तुति, करे या सुने। इसके प्रभाव से आप के दिव्य स्वरुप का प्रभाव आता है। इससे जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसे आप के दिव्य रुप का भाव सदैव हमारे मन में बना रहे। ऐसी कृपा का प्रसाद सदैव बना रहे।(९)

मुक्तानंद स्वामी के मन की बात

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीहरि चरित्रामृत सागर पुर-७, तरंग-४९ में सद्‌गुरु आधारानंद स्वामी लिखते है कि,

श्रीहरि का जो अभिप्राय था । उसे मुक्तानदं स्वामी जानते थे । और मुक्तानंद स्वामी का अभिप्राय नित्यानंद स्वामी जानते थे । शुकानंद स्वामी श्रीहरि अभिप्राय जानते थे । लेकिन वे मुक्तानंद स्वामी के आगे कह नही सकते थे । ब्रह्मानंद स्वामी उस समय श्रीहरि की ईच्छा के कारण जुनागढ में थे । गोपालानंद स्वामी योगीराज कहे जाते है । श्रीहरि के सद्‌गुणो के पात्र थे । अर्थात् कृपा पात्र थे । मुक्तानंद स्वामी का सत्संग के उपर जो लगाव था । वैसा ही प्रेम गोपालानंद स्वामी को भी था । वे स्वयं सब जानते थे । लेकिन समय पर बोल नही सकते थे । नित्यानंद स्वामी काफी शक्ति वाले थे । इस लिये विचार करके मुक्तानंद स्वामी के सामने बोले, आप की ईच्छानुसार मैं प्रेम पूर्वक कार्य करुगा । आफ कृपा करके मुझसे कहे । मैं रंच मात्र बदलाव नही होने दूँगा । यह सुनकर मुक्तानंद स्वामी खुश हो गये । अपना दोनो हाथ नित्यानंद स्वामी के उपर रखखर बोले नित्यानंद स्वामी ! आप सुने इस शरीर का काल समीप आ गया है । मन में अभी आभिलाषाये रह गई है । ये मेरी ईच्छा आप को पूर्ण करना है । जिसे मैं अधूरा छोड कर जा रहा हूँ । दूसरा जन्म होता है । ऐसा शास्त्रो से सुना है । लेकिन कोई ऐसा अवतार हुआ हि नही है । जिसकी बुद्धि जड हो । उसे समझ में नही आये । ऐसे लोगो के पाप का नाश हो । इसकी आप को पता लगाना है । लोग आँखो से भगवान श्रीहरि को देखते है । लेकिन समझ नही पाते है । श्रीहरि इस समय प्रगट होकर शुद्ध उद्धव सम्प्रदाय चलाये है । जिसका पंच प्रवर्तमान पालने में रुचि हो, उसे मोक्ष में रुचि उत्पन्न हो । नीति अनुसार चले वही धर्म है । अनीति पर चले वह अधर्म है । नीति का राज स्थायी होता है । श्रीहरि को नीति पसंद है । अनीति नही पसंद है । जिसे अनीति प्रिय है उसे संसार का भय लगता है । आप को नीति की स्थापना करना है । अनीति को महापाप समझना है । जितने हरिभक्त है । उन सभी को नीति के मार्ग पर चलाना है ।

श्रीहरि का जितना प्रताप है । इन दोदो दत्तपुत्रो में (आचार्यश्री) स्थापना किये है । जो शुद्ध आचार्य पद है । जो भगवान श्रीहरि ने दोनो को दिये है ।

जिसे उद्धव सम्प्रदाय कहा जाता है । उन दोनो को आचार्य बनाये है । उद्धव सम्प्रदाय के आचार्य जिस विधिसे प्रमुख रहे । वैसा आप को करना है । इतनी मेरे मन में इच्छा है । हमारे इस बचन को आप को मानना है । मुझे आप पर विश्वास है । क्योकि आप मुझे चर्तुमुख ब्रह्मा जैसे दिखाई देते है । श्रीहरि के प्रताप से कोई दूसरा विद्वान शास्त्रार्थ में आप को हरा नही सकता है । मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कोई दूसरा विद्वान

आप की तुलना में नही आ सकता है। अपने आचार्य को कोई पराजित करने आये तो उसका धर्म तथा नीति से उनसकी जड समाप्त कर देना। धर्मवाले और नीतिवान संतो को साथ में रखकर चलना। और धर्म कुल की स्थापना करना है।

तब नित्यानंद स्वामी कहे कि आप जैसा कहे है वैसा मैं आज से करुगा। बाद में मुक्तानंद स्वामी ने धर्माख्यान दिये थे। और बोले निपुणता से ग्रन्थ की शुद्ध करियेगा। इतनी सलाह देकर मुक्तानंद स्वामी अर्न्तदृष्टि कर लिये।

इस बात से स्पष्ट होता है कि, सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी की अंत समय पर दो ईच्छा थी। एक धर्माख्यान ग्रन्थ की रचना करना और दूसरा श्री स्वामिनारायण भगवान ने जो अपने स्थान पर आचार्य पद की स्थापना किये। उसे सर्वोपरि करके रहना। मुक्तानंद स्वामी अपने अन्तिम दिनो में धर्माख्यान लिखते थे। उम्र के कारण लेखनी हाथ से गिर जाती थी। फिर भी ग्रन्थ की रचना करते रहते थे। वचनामृत गढडा मध्य-५८ में जो श्रीजी महाराजने मुक्तानंद स्वामी को आदेश दिये। उसका स्वामी अक्षर सह पालन किये थे। अपने पूरे जीवन काल में २१ जितने ग्रन्थो की रचना तथा असंख्य कीर्तन लिखे थे। अन्त में जो धर्मग्रन्थ अपूर्ण रह गये थे। उसे सद्‌गुरु श्री नित्यानंद स्वामीने शुद्ध कर पूरे किये थे।

मुक्तानंद स्वामी का दूसरा संकल्प था कि महाराज के पुत्र जो आचार्यश्री उसे इस संसार से परिचय कराना। वे जब बिमार हुए। बाद में कुछ आराम मिलने पर वे अपने संत मंडल से बोले। हे संतो ! अब हम स्वस्थ है। अब आचार्यश्री को साथ में लेकर गाँव-गाँव जाकर परिचय करवाना है। सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी सं १८८६ के वर्ष में धाम में आये थे। यह कार्य सद्‌गुरु नित्यानंद स्वामी जीवन भर किये थे। सं. १९०८ में शरीर रही थी। इमन २२ वर्षो के मध्य में स्वामीजी वडोदरा, उमरेठ, वडताल, अहमदाबाद, गढडा, मूली, भुज आदि शहरो तथा ग्रामीण क्षेत्रो में विचरण करके मुक्तानंद स्वामी के संकल्प के आधार पर आचार्यश्री की प्रतिष्ठा में वृद्धि किये थे। नंद संतो की इस प्रणाली में आज भी संत तथा हरिभक्त आचार्यश्री को सर्वोपरि मानकर उनकी गरिमा समझाते है।

स्वामिनारायण भगवानने आचार्यश्री को इस सम्प्रदाय की बागडोर दे दिये। उन्होने ने ही नाविक बनाया है। श्रीमद् सत्संगीजीवन प्रकरण-४, अध्याय-६६ में भगवान श्री स्वामिनारायण कहते है कि हे पुत्रो, हमने आप लोगो को दो मंदिर अर्पण किये है। यह अपने बाहुबल से सम्पादित किया हूँ। इस लिये इसमें पिता या भाईयो का कोई अधिकार नही है। यह निश्चित समझे। मुझे बद्रीपति ऋषि नारायण की तरह तप प्रिय नैष्ठिक ब्रह्मचारी माने। अपने धाम में इस लोक में मैं अपनी इच्छा से आया हूँ। और पुनः अपने धाम में जाउगा। ऐसा समझे जिसे मुझे देने की इच्छा थी। उसे मैं कहे अनुसार स्वतंत्र रुप से मैने दे दिया है। इस लिये मेरे द्वारा प्रदात्त में किसी का कोई भी हिस्सा नही है।

सम्प्रदाय में श्रीजी महाराजने धर्मकुल आचार्य के सत्संग को प्रतिष्ठा किये है। सम्पूर्ण व्यवस्था धर्मवंशी आचार्य के माध्यम से स्वयं स्वामिनारायण भगवान कर रहे है। साधु, सत्संगि अनुरागी आश्रित है। मालिक स्वयं स्वामिनारायण भगवान है। सत्संग में हम मात्र पूर्ण प्रयत्न करके सेवा भजन का अनुसरण कर सकते है। नया मंदिर बनाना हो, मंदिर में परिवर्तन करना हो, बडे उत्सव (नित्य, वार्षिक नैमित्तिक सिवाय) शास्त्र का प्रकाशन करना हो, प्रतिष्ठित मूर्तियो में परिवर्तन करना हो। तो धर्मवंशी आचार्य की मौखिक लिखित आज्ञा लेना पडता है। उनके तरफ से आज्ञा-आशीर्वाद मिल जाने पर उनके वचन रुपी शक्ति से कार्य पूर्ण होता है। वह ऊर्जा श्रीहरि कार्य सफल करने में तथा प्रेरणा देता है। उसमें सहभागी होने वाले साधु-सत्संगी के विचार व्यवहार अपने सत्संग में देख सकते है।

सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी के मन की इस बात को समझकर जीवन भर अनुसरण करे तो स्वामी पूर्ण रुप से खुश होगे।

स.गु. मुक्तानंद स्वामीका अनन्य आश्रय

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कई ब्रह्मांडो के अधिपति शिव, ब्रह्मा इत्यादि तथा दूसरे मुक्त चंदन, पुष्प वस्त्र से पूजित तथा भक्ति पूर्वक धर्म और वेदो की स्तुति करते अनेक कोटी ब्रह्मांड के राजाधिराज कहलाने वाले चक्रवर्ती की शोभावाले भगवान श्री स्वामिनारायण अति तेज युक्त और दिव्य ऐसे अपने ब्रह्मपुर धाम अर्थात् अक्षरधाम में सदैव विराजमान है । ये भगवान अपने भक्तो को जो जिस प्रकार का भाव रखता है । उसे उसी प्रकार का अपना दर्शन देते है । आज नारायणमुनिने शास्त्रो में पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण नाम से कहे है । और वे भगवान इस पृथ्वी के उपर राम-कृष्ण आदि अवतार से अपने भक्तो को सुख देने के लिये आते है ।

अक्षरधाम पति भगवान श्रीहरि ही है । वे ही भगवान श्री नरनारायण रुप में बद्रीकाश्रम में रहकर, अपने भक्तो के निर्विध्न कल्याण के लिये ऋषि रुप में अखंड तपस्या कर रहे है । इसी कारण से भरतखंड में उनके भक्तजन तप, ज्ञान, भक्ति से भी अल्पकाल में वृद्धि प्राप्त करते है । दिव्य अक्षरधाम स्वयं के प्रिय ऐसे नरनारायण की सेवा के लिये हिमालय में बदरीवन स्वरुप में है ।

भूगोल-खगोल के वचनामृत के आधार पर श्रेष्ठ जम्बूद्वीप के मध्य स्वर्ण युक्त मेरु पर्वत है । उस पर्वत के दक्षिण भाग में भारत खंड है । उसमे नरनारायणदेव की उपासना है । वहाँ पर नारदजी प्रमुख भक्त है । ब्रह्मा के पुत्र नारदजी भगवान का भजन करके भगवान के मन कहे जाते है । श्री नरनारायणदेव प्रसादीकी मूर्ति में श्री नारायण भगवान के दाहिने तरफ एकहाथ में वीणा तथा हाथ में चामर लेकर नारदजी तथा श्री नरनारायण भगवान के बाये तरफ बडे सेवा में उद्धवजी का दर्शन मिलता है । सत्संग में उद्धवजी श्रीहरि के गुरु श्री रामानंद रुप में प्रगट हुए । उसी प्रकार सत्संगिभूषण शास्त्र के तीसरे अंश के अ.-४१ में श्रीहरिने अग्रगण्य कई संतो के पुराने नाम कहे ! उसमें से मुक्तानंद मुनि का दूसरा नाम नारदमुनि है । ये मुक्तानंद मुनि साधुता के सम्पूर्ण गुणो से युक्त थे । इस कारण से श्रीहरि भी लोक शिक्षण हेतु उसमें गुरु भाव रखते है । मुक्तानंद स्वामी को सत्संग की 'माँ' पद से सम्मानित किया जाता है । सत्संग में सबके लिये आदर्श संत स.गु. मुक्तानंद स्वामी ने ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का अनन्य आश्रय दिखाने वाले तथा दोष दूर कराने वाले एक स्तोत्र का गायन अहमदाबाद श्री नरनारायण भगवान के मंदिर के सामने चौक में विशाल सभा में पूर्ण किये थे । जो श्रीहरि के आश्रितो को मनन करके हृदय में रखना चाहिए । जो सत्संगिभूषण अंश-५ के अ.-९ में दिया गया है । जिसका भाव निम्नलिखित है ।

श्री मुक्तमुनि कहे - हे सर्वोपरि श्रीहरि ! हे धर्मपुत्र ! आपकी सेवा को छोडकर मैं किसी अन्य मनुष्य देव की सेवा तो मेरे ये दोनो हाथ तीक्ष्ण हथियार से काट दे । रसिक और उदार स्वभाव वाले है हरिकृष्ण ! मैं आप का ध्यान नही करु तो कुल्हाणी से मेरी हृदय में छेद कर देना । हे भगवान ! आपके सिवाय किसी अन्य आराध्यदेव को प्रणाम करु तो मेरा सर मूंसल के प्रहार

से तोड दे । हे शरणागत वत्सल ! आप के अलावा किसी अन्य में मेरा भगवान का ध्यान आये तो मुझे चंडाल से भी नीच मानियेगा । स्त्री के प्रति लगाव आये तो लंपट पुरुष माने ! हे सर्वेश्वर श्रीहरि ! आप के नाम का जप छोडकर दूसरे देवो का जप करु तो मेरी जीभ छुरी से काट देना । हे प्रभु ! मैं अपने ललाट पर भय या लोक लाज से उर्ध्वपुंड आदि प्रतीको को धारण नही करु तो मुझे जिंदा जला देना है । स्वामी ! मैं अपने जीवन निर्वाह के लोभ से प्रेरित होकर सार्वजनीक रुप से भक्ति करु तो मुझे ऊँचे चोटी पर लेजाकर वहाँ से फेक देना । हे श्रीहरि ! आप के रुप में सर्वोच्च शक्ति है । यह मेरा विश्वास है । यह विश्वास हटे तो मुझे शूली पर चढा देना । और तीक्ष्ण बाणो से बधकर देना । हे अजन्मा ! अक्षराधीश आप का दास बनकर, आप के सिवाय किसी स्वार्थी पुरुष से अपेक्षा रखु तो, मुझे धूर्त, नीच लम्पट पुरुष से भी नीचा पुरुष मानना । हे परमात्मा ! यंत्र, मंत्र और तंत्र सत्य है । ऐशा मानकर मैं उससे प्रेम करु तो कुमति युक्त, निलज्ज मूर्ख को अवश्य संज्ञानित करे । हे स्वामी ! मैं आप की धर्म रहित भक्ति करु तो भी आप से डर नही तो मुझे पृथ्वी के असुरो से बड़ा पापी समझना । हे अच्युत भगवान ! आप हमारे आराध्य देव है । आप से मन विरक्त हो तो मुझे कुत्ते और सियार से अधिक दूष्ट समझना । हे श्रीहरि ! हरिकृष्ण नाम वाले आप को साक्षात् पाया हूँ । फिर भी भौतिक पदार्थो में आसक्ति हो तो मुझे मूर्खो का सरदार समझना । हे सर्वेश्वर ! प्रत्यक्ष रुप में आप का त्याग करके किसी अन्य मानव के प्रति प्रेम हो तो मैं पाप का पर्वत हूँ । ऐसा मानियेगा । हे प्रभु जो देव मद्य, सुरा, मास आदि देने से सभी कार्य पूर्ण हो । यदि मैं ऐसे देव की सेवा करु तो मेरे सिर पर भारी प्रहार हो । हे भक्ति धर्मात्मज श्रीहरि ! आप के सिवाय इस लोक में दूसरा कोई देव मनुष्य की मुझे इच्छा बने । तो यह मेरा साधु रुप न रहकर वैश्या का रुप है । ऐसा मानियेगा ।

इस तरह मुक्तमुनि अपने श्रीहरि के प्रति दृढता पूर्वक सभा में कहे और सुनाये थे । हे गर्व रहित प्रभु ! मेरे द्वारा गाया आपके स्तोत्र का जो प्रेम से श्रवण करेगा । अथवा श्रद्धा से पाठ करेगा । इससे श्रोता-वक्ता का लोग मंगल होगा । मुक्तानदं स्वामी ने इसे वीणा के वादन के साथ गाये थे । यह सुनकर अक्षराधिपति श्रीहरि खूब खुश हुए । सभी सभाजन मुक्तमुनि की प्रशंसा करने लगे ।

आज भी त्यागी गृही, आश्रित में यदि आराध्य देव श्रीहरि के प्रति विश्वास रहेगा । उस पर श्रीहरि खुश होगे । श्रीहरि के खुश होने पर जीवन में कुछ शेष नही रह जाता है । स्तोत्र के विवेचन का संक्षिप्त सार अनंत कोटी ब्रह्मांडो मं एक मात्र कोई भगवान है तो अपने आराध्य देव स्वामिनारायण भगवान है । और ये भगवान वर्तमान काल में हमें श्री नरनारायणदेव स्वरुप सनातनी धर्मवंशी आचार्य रुप तथा शिक्षापत्री रुप में साक्षात् मिले है । शिक्षापत्री के मर्यादा में रहकर गद्दी पर विराजमान वर्तमान धर्मवंशी आचार्यश्री के प्रभाव में रहकर सम्प्रदाय की सेवा तथा आराध्यदेव की सेवा वचनामृत में बताये है । आराध्य भगवान श्रीहरि का ध्यान करना चाहिए । किसी ब्रह्मवेत्ता मनुष्य का ध्यान कभी भी नही करना चाहिए । शिक्षापत्री के अनुसार शिवालय या देव का मंदिर आये तो आदरपूर्वक प्रणाम करना चाहिए । हमारे देव इतने प्यारे है कि उन देव के लिये भी वह प्यारे है । पंचदेव उसी प्रकार धर्मकुल के कुलदेव और सभी के देव श्री हनुमानजी की शास्त्रो में सर्वोपरि उपासना की जाती है । श्रीहरि को जडता प्रिय नही है । विवेक और नम्रता अच्छी लगती है । मुक्तानदं

स्वामी ने दु:खी मनुष्यो के दुख निवारण हेतु मारुति स्तोत्र की रचना किये है।

स्वामीजी कहते है, उर्ध्वपुंड्र आदि चिह्नो को धारण न करु तो मुझे जीवित जला दे। चिह्नो की इतनी खुशी है। श्रीहरि के आश्रित युवको को इस बात को समझना चाहिए। तिलक-माला तो अखंड रहना चाहिए। श्रीहरि के आदेश का उल्लंधन करने पर सिर खाली रहने पर शर्म आनी चाहिए। कई कायर भक्त तिलक और माला पहसे में शर्म करते है। इसी प्रकार कुछ सधवा महिलाये भी ललाट पर कुमकुम का गोल तिलक करने में शर्म करती है। भगवान का भक्त होना शूरवीरो का गोल तिलक करने में शर्म करती है। भगवान का भक्त होना शूरवीरो का कार्य है। कायरो का कार्य नही है। धर्म रहित भक्ति नही करना चाहिए। धर्म के साथ भक्ति करना चाहिए। क्योकि भक्ति माला प्रतिव्रता स्त्री है। जहाँ पर धर्म का पालन नही होता है। वहाँ पर भक्ति माता नही निवास करती है। जीवन में धर्म युक्त भक्ति रहने पर तो हरि अपने हृदय में अखंड निवास करते है। क्योकि श्रीहरि भक्ति के पुत्र है। हरिकृष्ण नामे वाले भगवान श्रीहरि हम सभी को आज भी मूर्ति रुप में साक्षात् प्राप्त हुए है। फिर भी नासवान पदार्थो में आसक्ति रखे तो इससे बड़ा मूर्ख कोई नही है। प्रत्यक्ष भगवान में प्रीति लगाये। वचनामृत में श्रीहरि के वचन देखे तो..... भगावन के अलावा दूसरे देव की उपासना नही करना चाहिए। यदि दूसरे देव की उपासना करते है तो भारी दोष लगता है। तथा पतिव्रता भी समाप्त हो जाती है। जो वैश्या जैसी भक्ति होती है। इस लिये भगवान के प्रति सीता एवम् रुक्मणी जैसी भक्ति करे। उस भगवान का ध्यान करे, किसी दूसरे देव का ध्यान नही करें। दूसरे साधु भी जो सिद्ध गति को प्राप्त किये है। या समाधिलिये है। उनका भी ध्यान नही करना चाहिए।। (ग.म.-१९)

भगवान का सहारा ही सबसे बड़ा साधन है। ऐसा करने पर भगवान खुश होते है। यह सहारा अति दृढ होना चाहिए। जिस में कोई गलती नही होतनी चाहिए। (भगवान के अलावा कोई सहारा नही) .... (ग.प्र.प्र.-३३)

जैसे कुत्ता हड्डी को लेकर एकांत में कुतरता है। उसे वह सुख मानता है। उसी प्रकार मानव दुख को सुख मानकर तुच्छ वस्तुओ से प्रेम करता है। और जो भगवान का भक्त होता है। उसे भगवान के प्रति प्रेम होता है तो अच्छी बात अन्यथा अन्य भौतिक पदार्थो के साथ प्रेम हो तो वह भक्त अच्छा नही है। सच्चा भक्त हमेशा भगवान में रमा रहता है।(ग.म. ५७)

भगवान का भक्त के प्रति दृढ सहारा होना चाहिए। जिसको प्रभु का आभास हो चुका है। उसे छोटे-छोटे या बडे-बडे मुक्त या साधु के साथ प्रीति नही होती है। जिस स्वरुप में प्रीति हुई उसी में अनुराक्ति बनी रहती है। वह उसकी ईच्छानुसार कार्य करता है। जिसे अपने आराध्य देव में पतिव्रता जैसी दृढ भक्ति होती है। दूसरे गुणवान को देखने पर भी कुछ लगाव नही हो पाता है। जैसे हनुमानजी श्री रघुनाथजी के भक्त है। रामावतार के बाद कई भगवान के अवतार हुए है। लेकिन हनुमानजी का रामजी के प्रति प्रतिव्रता जैसी भक्ति देखने को मिलती है। जो ऐसा भाव नही रखते है। वह भक्ति व्यभिचारिणी जैसी भक्ति कही जाती है। इस लिये जान बूझकर नाक-काटने वाली भक्ति नही करना चाहिए। इसलिये भगवान के भक्त को सोच-विचार कर पतिव्रता जैसी दृढ भक्ति करना चाहिए।(ग.अंत्य-१६)

गायें ताली बजाकर, मिलकर गाये

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

भगवान श्री स्वामिनारायण सोलह कलाओ के साधक और पोषक थे । उनके पास मंदिर निर्माण के ज्ञाता वास्तुकला के जानकार संत, वादन-गायन संगीतकला में निपुण संत, साहित्य कला के विशेषज्ञ, कथावाचक, श्रमदान कर्ता, शूरवीरो का समूह था । भक्ति में लीन भक्त, ऐश्वर्य वाले अपार संत भक्त थे । भगवान श्रीहरि स्वयं इन सभी को प्रोत्साहन देकर निपुण समूह बनाये थे ।

इस लघुलेखा में सम्प्रदाय की संगीत कला का रंचमात्र उल्लेख कर रहे है । श्रीहरि के समय में भक्तगण मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल, दुक्कड इतुायदि अनेक संगीत के साधन को लेकर श्रीहरि के सामने कीर्तन-भजन करते थे । श्रीहरि वचनामृत ग.प्र.-२२ में उनका सिद्धान्त बताते है । ''उन्हे यदि भगवान के प्रति स्मृति न रहे तो गीत, निरर्थक है । कीर्तन, धुन जो कुछ भी करे भगवान की मूर्ति को सुनाकर ही करे... आधीक में ग.प्र.-२६ में कहते है कि आप जब प्रिय कीर्तन गाते है तब आँख बंद करके ऐसा ही विचार करते है ।

श्रीहरि को संगीत कला में विशेष रुचि थी । ग.म.-१३ में लिखते है कि ''कीर्तन गाते समय वो भी मिलकर कीर्तन गाने लगते थे ।'' संत भी कैसे थे ? जिनके पद ब्रह्मानंद में गाये जाये गोलोक में ये ब्रह्मानंद तथा मुक्तानदं स्वामी का पद गाया जाता है । ब्रह्मानंद, प्रेमानंद, मुक्तानंद, मंजुकेशानंद, अचित्यानंद, निष्कुलानंद, भूमानंद, देवानंद आदी उच्च कोटि के गायको का श्रीहरि अधिक सन्मान करते थे । उन्हे अतिशय प्रोत्साहन भी देते थे । प्रेमानंद स्वामी जब भजन गाते थे । तब श्रीहरि कहते थे कि इस साधु को उठकर साष्टांग दण्डवत करु । (ग.म.-४८) वचनामृत में लिखा है कि कई बार श्रीहरि कथा-वार्ता रोककर कीर्तन का लाभ लेते थे । कई बार कीर्तन रोककर उपदेश भी देते थे । प्रेमानंद स्वामी नित्य चेष्ठा के पद-४ में लिखते है कि,

वाता करे रे, कथा वंचाये तोये,
सांभले कीर्तन रे, पोते कईक विचारे.......

फिर पद-२ में श्रीहरि की कीर्तन-भक्ति में लगाविधी का वर्णन करते लिखते है कि

साधु कीर्तन रे, गाय, गजाडी वाजाँ
तेमने जोई रे मगन थाय महाराज,
तेमनी भेला रे, चपटी वजाडी गाय,
संत हरिजन रे नीरखी राजी थाय.
क्यारेक साधु रे, गाय वजाडी ताली
भेला गाय रे ताली दई वनमाली.

इस संतोने अनेक रागो जैसे किछोल, विभास, टोडी, भैरवी, केदार, प्रभासी, विहाग, सोहनी, विलावर, सामग्री, सारंग, गरबी, सामेरी, गोडी, काफी, रेखता, कानरो, कल्याण, मेवाडो, पुरव, गंजलो, मारु, माच, ठुमरी, लावनी, दादरा, सोहनी, धनाश्री, भूपाली इत्यादि अनेक राग रागनियो में पदो की रचना किये है । श्रीजी के सामने पूरे भाव से इन पदो को गाया जाता है । आज तो शास्त्रीय राग पर आधारित भव्य पद गाया या सुना जाता है । आज कल यह कम हो गाय है ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के पंचम पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी

महाराजकी स्मृति नजर के सामने आ जाती है। वे स्वयं संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे । संस्कृत में उन्होने श्लोको की रचना स्वंय किये थे । वे शास्त्री संगीत के विशेष ज्ञानी थे।

संगीतमपि साहित्यं सरस्त्यां स्तनयम्।
एकमापात मधुरमद्यदलोचनामृतम् ॥

संगीत और साहित्य ये सरस्वती माता के दो स्तन है। संगीत सुने तो मधुर लगती है। और साहित्य विचार करने पर अमृत के समान लगता है।

साहित्य और कला के सुन्दर समन्वय रखने वाले आचार्यश्री कला के उत्तम पोषक थे। अहमदाबाद मंदिर के संत श्री वल्लभदासजी ने उन्हे संगीत के जानकार उस्ताद फैयाजखान के पास भेजे थे । आज श्री वल्लभदास संगीत में उच्च स्थान रखते है। गाने वाले को सम्मान देने वाले आचार्यश्री उच्च माने जाने वाले उस्ताद फैयादखान, पंडित जसराजजी, पंडित ओंकारनाथ, पंडित कृष्णारावजी, पंडित मणिरामजी, उस्ताद लताफतखान इत्यादि गायको को सम्मान दिये । तथा उनका स्वागत किये थे । स्वयं शास्त्रीय संगीत में ध्यान देते थे।

अच्छे और विद्वान लोगो के विषय में कहा जाता है कि

काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छतिधीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

बुद्धिमान लोगो का समय काव्य और शास्त्रो के पढ़ने और सुनने मे जाता है। जब कि मूर्ख लोगो का समय व्यसन, नींद और झगडा में जाता है।

इस आधार पर आचार्यश्री भी साहित्य-संगीत की गोष्ठी करते है । सानंद के ठाकुर साहब महाराणा जशवंतसिंहजी संगीत के प्रेमी थे। उनका आचार्यश्री के प्रति अपार लवाग था । धर्मकुल के साथ घरेलु सम्बन्धथा। उसे पंडित जसराजजी प्रेम से बनाकर रखे थे । वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य प.पू.श्री व्रजरायजी महाराजश्री भी शास्त्रीय संगीत के प्रणेता और चाहक थे। वे कभी-कभी शास्त्रीय संगीत, हवेली में संगीत का आनंद लेते थे। श्री व्रजराय महाराजश्री, ठाकुर साहब, पंडित जसराजजी, आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज और लालजी श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज कभी-कभी धर्मवंशी के घर मिलकर ज्ञान गोष्ठी और संगीत का रसपान करते थे । कभी-कभी आचार्यश्री, संगीत प्रेमी, संतो हरिभक्तो को बुलाते थे । और धीरे-धीरे पंडित जसराजजीका धर्मकुल के साथ अच्छा लगाव हो गया था । पद्मश्री पदम् विभूषण और पद्म भूषम से सम्मनित जसराजजी वर्तमान पीठाधीश्वर श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के विवाह उत्सव में आये थे। धर्मवंशी के घर पर गोविंद दामोदर स्तोत्र, संत परम हितकारी आदि का गायन करके दिव्य वातावरण बना दिये थे । धर्मकुल के प्रति इतना धनिष्ट लगाव हो गाय था । कि रात्री के कार्यक्रम के बाद अपनी प्रिय गुजराती खीचडी खाने की ईच्छा दर्शाये थे। रात्रि के दो बजे उनकी इस माँग को आचार्यश्रीने विना देर किये स्वीकृत किये थे।

वर्तमान गादीपति आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गद्दी अभिषेक के सम्मान समारोह जब अहमदाबाद के सरदार पटेल स्टेडियम में भव्यता से मनाया गया था । उस समय पंडितजी अपने व्यक्तिगत कार्य से आये थे। महाराजश्री के गद्दी अभिषेक को जानकर बोले की मुझे लालजी महाराज के प्रसंग में तो जाना ही पडेगा। मुझे निमन्त्रण की आवश्यकता नही है। मैं घर का मेहमान नही बल्कि हम यजमान है ! कितना अपनापन, निकटता और

विनग्रता । वे सीधे स्टेडियम में आये और मंच के उपर आकर आशीर्वाद श्लोको के द्वारा किय थे ।

एक बार, आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आबू में अपने घर पर थे । और पंडितजी को वहाँ बुलाये थे । रात्रि में शास्त्रीय संगीत का आयोजन किया था । उस समय आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लालजी रुप में थे । और कालेज में पढते थे । वह पैर में जूते पहने हुए थे । पंडितजी की नजर उनके उपर गयी । उन्होने विनम्र भाव से कहा कि यह गीत माँ सारदा की आराधना है . वह तुरंत समझ गेय । लालजी जूता निकालकर संगीत सभा में बैटे । कला की साधना, मर्यादा, गौरव, किस तरह बची रहे । उसकी उत्कृष्ण अनुभव सबको हुआ । आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने पंडितजी की टकोर और लालजीश्री की समझदारी की उदार दिल से प्रशंसा किये ।

नब्बे वर्ष की उम्र होने पर ता. १७-८-२०२० को पंडितजी का स्वर्गवास हुआ । इसलिये आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज भी श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना करते हुए बोले कि महाराज ! अपने चरण में आत्मा को सुख प्रदान करे ।

पिताश्री और आचार्यश्री के कदमो पर चलकर आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी और वर्तमान पीठाधिपति श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी कला के पोषक और सम्वर्धक है । वे प्रत्येक कलाकार, विशिष्ट ज्ञान कौशल्य वाले को योग्य सन्मान योजित कार्यक्रम करके करते है । कारण है कि

मान्या एव हि मान्यानां मानं कुर्वन्ति नेतरे ।
शुंभुर्बिभर्ति मूर्ध्नेन्युं स्वार्भानुस्तं जिधृक्षति ॥

सम्मान देने योग्य उत्तम पुरुष का सम्मान उत्तम पुरुष ही करते है । दूसरे नहीं करते है । जिस प्रकार महादेव शंकर चंद्र को सिर पर धारण करते है । और राहु तो उसको खा जाता है ।

सभी कलाये अच्छी है । और विशेष अध्ययन चाहती है । उसमें गायन विद्या कठिन होती है । उसे ग.प्र.-४ वचनामृत में श्रीहरि कहते है कि, नारदजी सात मन्वंतर तक गायन विद्या सीखे थे । और जब भगवान के सामने गाये तो भगवान खुस नही हुए थे । बाद में तुबरं के पास गायन विद्या सीखे थे । और द्वारिका में श्रीकृष्ण भगावन के सामने गाये तब जाकर श्रीकृष्ण भगवान खुश हुए ।

हमारे धर्मवंशी आचार्यश्री एवम् उनके यज्ञपूर्व से लोग अतिशय संगीत प्रेमी थे । आदी आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का संगीत के प्रति अत्याधिक लगाव था । श्रीहरि को कला अति प्रिय थी । देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री देहत्याग से पहले शास्त्रीय संगीत सुनने की इच्छा लालजीश्री तेजेन्द्रप्रसादजी के सामने किये थे । लालजीश्रीने तत्काल उपलत्धरिकार्ड से पूर्ण किये थे । यह सुनकर आचार्यश्री तुरंत श्रीहरि के सानिध्य में लीन हो गेय । इतना उत्कृष्ट लगाव उनका संगीत के प्रति था ।

जिन हरिभक्तो का संगीत में रुचि हो । उसे पुराने संतो से हमारे प्रसादी के कीर्तन के मूल राग सुनकर उसे सिखने का प्रयास करे । डी.जे. के राग पर कीर्तन नही गाते है । उससे श्रीजी की कृपा नही प्राप्त होती है । इस लिये प्रसन्न चित्त से श्रीजी की मूर्ति हृदय में बासकर गाने का प्रयास करे । श्रीहरि और अपने आचार्यश्रीओने कला का संरक्षण किये है । जिसकी रक्षा करके हमें परम्परा में प्रदान किये है । उसका महत्व समझना चाहि । श्रीजी के समय बिरोसते प्रयोग किये गये । कई संगीत के साधनो के प्रसाद आज भी स्वामिनारायण म्यूजियम में दर्शन हेतु रखे गये है । उसका भाव पूर्वक दर्शन अवश्य करना चाहिए ।

भगवान का सम्बन्धकिसे कहे

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

व्रत, तप, नियम, सत्संग, नवधा भक्ति, ध्यान इत्यादि श्रीजी के प्रसन्नता के साधन करना चाहिए । उसमें से भगवान का सम्बन्धकिस से है । अथवा किससे हुआ कहा जा सकता है । (ग.प्रथम-६२) वचनामृत में भगवान श्री स्वामिनारायण ने सम्बन्धकी परिभाषा बताये है । जिसका भगवान के स्वरुप का यथार्थ महिमा के साथ निश्चय हो । उसे भगवान का सम्बन्द कह सकते है । जिसके साथ रहता है । उसका गुण उसमें अवश्य होता है । भगवान के साथ सम्बन्द रखने से भवान के सल्या कारी गुण आते है । लेकिन व्रत, तप, नवधा भक्ति इत्यादि साधन है । लेकिन जब सर्वोपरि सर्वावतार का सदा दिव्य साकार रुप निश्चित हो जाता है । तब भगवान से सम्बन्धहोता है । तभी अक्षरधाम की प्राप्ति होती है ।

महाराज कहते है कि हम त्याग के पक्ष को छोडकर मंदिरो की स्थापना करते है । जिससे परम्परा, उपासना सुरक्षित रहे । श्रीजी महाराजजी मंदिरो की स्थापना किये । अपने हाथ से अपने रुप की पूजा करने के लिये स्थापित किये । अपने स्थान पर धर्मवंशी आचार्य पद की स्थापना किये । दिक्षित संत बनाये, गुरु मंत्र देकर हरिभक्त बनाये । सत्सशास्त्र किये और कराये । सुंदर धर्म की मर्यादा बनाये । जिसका पालन करके कल्याण पाया जा सकता है । उन स्थलो पर धर्मवंशी आचार्य मंदिर बनाकर मूर्ति स्थापित किये । यह स्थान उनके लिये आश्रय स्थान है । जिसे उपासना यशोचित बनी रहे । इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि मंदिर उपरोक्त व्याखयानुसार होते है । उसमें रहकर जो उपासना करे उसे साधु कहते है । कारण जो साधु बनता है वह स्वयं की भगवान के प्रति समर्पित कर देता है । इस लिये जो कुछ करे । अपने आराध्य देव के नाम से करें । अहमदाबाद में अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री बार-बार कहते है कि यदि मंदिर के अभिलेख देव के नाम से होगा । वही पर हम मूर्ति प्रतिष्ठा करने जायेगे । अन्यथा हमे कोई लगाव नही है । अपने नाम से प्राईवेट ट्रस्ट बनाकर महल जैसी संस्था बनाकर रखा । वह सम्पूर्ण भगवान के आज्ञा का उल्लंधन है । कितना भी अच्छा ज्ञान युक्त कथा-वार्ता होती हो । लेकिन आचारण भगवान के विरुद्ध हो तो वहाँ भगवान की कृपा नही होती है । ईष्टदेव में पूर्ण ईश्वरत्व का आभास हो तो ऐसा नही करना चाहिए । इससे लोग भगवान के हिस्सेदार बन जाते है । शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज प्रत्येक बात की आज्ञा किये है । उस आज्ञा में रहकर उपासना-भक्ति करना चाहिए । यह अपना प्राथमिक फर्ज समझकर महाराज को खुश रखना चाहिए ।

एक कोडी भी धन अपना कह कर रख ले । उसके मुख से कथा-वार्ता भी नही सुनना चाहिए । ऐसी आज्ञा धर्मशास्त्र में तथा सत्संगिजीवन में वर्णित है ।

इसलिये भगवान के साथ सम्बन्धरखना हो यर्थात आज्ञा-उपासना दृढ करना चाहिए । तभी भगवान के साथ सम्बन्धहुआ ऐसा कहा जा सकता है । उसे ही अक्षरधाम की प्राप्कि होती है । अन्य गुण बुद्धिवाला माना जाता है । इस लिये अन्य दूसरे साधन का त्याग करके भगवान को खुश करने के लिये । धर्म मर्यादा में रहकर शुद्ध उपासना करना चाहिए । अपने मन अनुसार भीड में रहकर भगवान को खुश करके अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है । इस लिये प्रत्येक को अपने मन से विचार करके । मन के प्रिय लगने को छोडकर भगवान को जो प्रिय हो वह करना चाहिए । इस मूल्यवान मानव शरीर के कल्याण हेतु यही याचना है ।

श्रीहरिचरित्र चिंतामणी - ग्रंथ परिचय

– महादेव प्रसाद जोशी (न्यु राणीप)

स्वामिनारायण संप्रदाय में कई ग्रन्थ आज भी सम्प्रदाय के अमूल्य आभूषण माने जाते है। भगवान स्वामिनारायण के लीला चरित्र का गायन रुप में गुजराती भाषा में रचित ग्रंथ ''श्रीहरिचरित्र चिंतामणी'' के बारे में प्रकाश डालने हेतु नम्र प्रयास किया गया है। जो जिज्ञासु भक्तो को अवश्य अच्छा लगेगा।

इस ग्रंथ के रचयिता सद्‌गुरु दयानंद स्वामी है। जिसका दूसरा नाम उत्तमानंद स्वामी भी था। अपने आराध्यदेव भगवान स्वामिनारायण के अनेक चरित्र को लाक्षणिक रुप में जीवंत करने के लिये। उसे शब्द शरीर रुप देने के लिये शुभ संकल्प के साथ स.गु. उत्तमानंद स्वामी ने श्री नरनारायणदेव मंदिर अहमदाबाद में संवत १९१७ को कार्तिक पूर्णिमा और बुधवार के दिन सम्प्रदाय की एक उत्तम ग्रंथ ''श्रीहरिचरित्र चिंतामणी'' की रचना किये थे।

इस ग्रंथ में २०४ कडवा है। ५१ पद और १६८५ चरण है। उपलब्धसूचनानुसार स.गु. दयानंद स्वामी के गाँव का नाम रेथल है। उनका जन्म १८४५ में हुआ ता। उनमके पिता सुंदरजी तथा माता का नाम अमृतबाई था। इस ग्रन्थ द्वारा हरिभक्तो को भगवान स्वामिनारायण के चरित्र और कार्यो के विषय में ज्ञान मिलता है। भगवान के जीवन काल के अनेक विचरण विषय की जानकारी मिलती है।

ऐसी उत्तम साहित्यिक रचना से प्रत्येक हरिभक्त को भक्ति रस में डूबा देती है। अपने सम्प्रदाय में स.गु. दयानंद स्वामी ने अन्य साहित्य के साथ मधुर कीर्तन भी दिये है। ''श्रीहरिचरित्र चिंतामणी'' ग्रंथ देखकर पढकर आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री स्वामी के सामने अधिक खुशी व्यक्त किये थे। और आशीर्वाद भी दिये थे। स्वामी श्रीजी महाराज के भक्ति के अनोके भाग थे।

स्वामीने संवत १९२२ में विसनगर में धाम गमन किये थे। वर्तमान में छत्री वहाँ पर है। आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने कहा था कि अपने सम्प्रदाय के एव अद्वितीय तारा खो गया। यह कहकर शोक व्यक्त किये थे।

ऐसे संत लोगो का जीवन हम सब के लिये वास्तव में प्रेरणा देने वाला होता है। उनके द्वारा रचित सम्प्रदाय का साहित्य मुठ्ठी भर है। जो एक निर्विवाद सत्य है।

नीचे के महामंदिरो में नित्य दर्शन के लीये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपिया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.swaminarayanmandirtorda.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ईडर : www.gopinathjiidar.com
नारणपुरा : www.sankalpmurti.org
धोलका : www.swaminarayanmandirdholka.co.in

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अपना पडोशी देश चीन सम्पूर्ण कोरना वायरस के कारण तथा वर्तमान समय में सीमाक्षेत्र विवाद के कारण चर्चा का केन्द्र बना हुआ है। लेकिन चीन में हाथ वाले पंखे की डिजाईन प्राचीन काल से चली आ रही है। वह सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। श्रीजी महाराज के समय में आज की तरह ए.सी. नही था। गर्मी का प्रभाव अधिक तथा साथ ही साथ यायात के साधन-माध्यम आज के समय जितने अच्छे नही थे। चिल चिलाती धूप में श्रीजी महाराज के साथ सभी संत हरिभक्तचल कर या बैलगाडी से यात्रा करते थे। जहाँ पर विराम करना होता था। वहाँ पर शरीर पसीने से तरबतर हो जाती थी। इसके गवाही में श्रीजी महाराज का प्रसादी वाला अंगोछा (गमछा) हाल नं. १ में रखा गया है। उसमें श्रीजी महाराज के पसीने के धब्बे सुरक्षित है। गर्मी से बचने के लिये उस समय का चीन निमिर्त मोड दार हाथ पंखा उस समय में उपयोग किया जाता था। यह पंखा श्रीजी महाराज अहमदाबाद में रंग महल में निवास के समय उपयोग करते थे। वह वर्तमान समय में होल नंबर-६ में दर्शन करने के लिये रखा गया है।

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि - सितम्बर-२०२०

दि. १९-०९-२०२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) दरबारगढ मोरबी - वर्तमान सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा ।
दि. २०-०९-२०२०	(प्रातः) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - विसनगर - ह. कोठारी परेशभाई । (दोपहर) श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज - साबरमती - ह. नयनाबेन सुमनभाई पटेल
दि. २३-०९-२०२०	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - राणीप - वर्त. कपिलाबेन पटेल ।
दि. २६-०९-२०२०	प.भ. गंगारामभाई महादेवभाई पटेल - मेमनगर - ह. ईश्वरभाई गंगारामभाई पटेल
दि. २७-०९-२०२०	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) दरबारगढ मोरबी - वर्तमान सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा ।
दि. २८-०९-२०२०	श्री दयालजीभाई रुदजीभाई गागाणी - नवावाडज - वर्त. मधुकर गांगाणी - न्युजीलैण्ड ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि - सितम्बर-२०२०

रु। ६,८८,७५०/-	प.भ. नीतिन हिरजीभाई वरसाणी (फ्लोरिडा-अमेरिका)
रु। ३,३१,५८०/-	प.भ. कल्याण जेसाणी (स्ट्रेधाम यु.के.)
रु। ५१,०००/-	प.भ. नारण प्रेमजी वेकरिया (स्ट्रेधाम यु.के.)
रु। ११,७००/-	अ.नि.प.भ. भालजा साहब के जन्मदिन पर (भा.व.-१०) उत्सव पर - ह. राजेन्द्र पटेल (एडवोकेट हाईकोर्ट) तथा ऋत्वीक पटेल (एडवोकेट हाईकोर्ट)
रु। ११,०००/-	प.भ. भालजा साहब (बडेभाई) के जन्मदिन पर - ह. प.भ. विभाकर पंड्य
रु। ११,०००/-	प.भ. परमार गंभीरसिंह जगमालभाई - ह. परमार भित्राजसिंह गंभीहसिंह (बळोल-भाल-अहमदाबाद
रु। १०,००१/-	प.भ. नारणभाई कानदास पटेल (डांगरवावाला-राणीप)
रु। १०,०००/-	चि. धर्म के जन्म पर - ह. जयेशभाई चंदुभाई पटेल - खेरवा (जतना)
रु। ५,१००/-	अ.नि. ललितभाई जगजीवनभाई ठक्कर - ह. राजुभाई ठक्कर (वासणा)
रु। ५,०११/-	प.भ. हिमानी सुरजकुमार पटेल (गांधीनगर-यु.एस.ए.)
रु। ५,०११/-	प.भ. अरुणभाई नारणभाई पटेल (अंबापुर)
रु। ५,००१/-	अ.नि. शारदाबेन शीवाभाई पटेल - ह. शीवाभाई पटेल (कुबडथल)
रु। ५,०००/-	प.भ. देवचंदभाई शामजीभाई डोबरीया (हीरावाडी-बापुनगर)
रु। ५,०००/-	प.भ. मीनाबेन के. जोशी सह परिवार - बोपल ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मनुष्य को पशु बनना है

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! आज हम बाल घनश्याम महाराज के अयोध्या निवास के समय की एक घटित प्रेरणादायक प्रसंग पढ़ते है।

उत्तर भारत में अति प्रसिद्ध अयोध्यानगर है । यह अति पवित्र नगर है । भगवान श्रीराम का जन्म इसी नगर में हुआ था । इस अयोध्यानगरी में चारो तरफ जहाँ भी देखेगे छोटे-बडे हजारो श्रीरामचन्द्र भगवान के मंदिर है । अयोध्या में जहाँ अपना मंदिर है । वह पर धर्म पिता का घर था । प्रभु छोटे थे तो कुछ वर्ष अयोध्या में बिताये थे । प्रभु प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर सरयू में स्नान करके मित्रो के साथ श्रीराम जन्मभूमि और हनुमानगढी में प्रतिदिन दर्शन करने जाते थे । सभी मंदिरो का दर्शन करने के बाद प्रभु घर आते थे । उनके घर के पास एक महादेवजी का छोटा मंदिर था । वे दर्शन करके प्रतिदिन मंदिर के चबूतरे पर बैठते थे । यह घनश्याम महाराज का प्रतिदिन का कार्य था । वचनामृत में स्वामिनारायण भगवान अपने मुख से कहते है कि । चबूतरे पर बैठते समय एक महादेवजी का भक्त प्रतिदिन उसी समय दर्शन करने आता था । विधिवत पूजा करता था । जल, फूल, चंदन चढाता एवं बाद में गालबजाकर महादेव को खुश करता था । बाद में मुह से बोलकर महादेव के पास से वरदान माँगता था । कैसा वरदान, आप सुने !

हे भोलेनाथ ! यदि आप मुझ पर खुश है । और मेरा पुण्य हो तो मुझे अगले जन्म में मैं लम्बकर्ण योनि (गधा, हाथी) में जन्म लूँ । मुझे मनुष्य नही बनना है । क्योकि मानव योनि में जन्म लेने के कारण शर्म बस भोग-विलास नही कर पाता हूँ । मुझे मरने के बाद मानव योनि में पुनः जन्म मत देना । मुझे लम्बकर्ण योनि में जन्म देना ताकि मैं किसी भी अवरोध, शर्म के विना, मनमाफिक कार्य कर सकू । प्रभु गढडा अन्तंय में १४ वे वचनामृत में इस प्रसंग को याद करके उसका विवेचन करने को कहे है।

भगवान की कृपा से ही मानव योनि में जन्म प्राप्त हुआ है । अच्छे देश एवम् अच्छे समय पर जन्म प्राप्त हुआ है । यह हम लोगो के उपर भगवान की बड़ी कृपा है । मनुष्य जन्म चिंतामणी के समान है । यदि जीव ईच्छआ करे तो मनुष्य जन्म में भगवान की भक्ति करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है । ऐसा अमूल्य मानव जन्म प्राप्त करके मनुष्य मोक्ष मार्ग की प्राप्ति न करे तो ''पुनरपि जननं पुनरपि मरणं'' जन्म मृत्यु के चक्र में फँसा रहेगा ।

ऐसा मूल्यवान मनुष्य का जन्म प्राप्त करने के बाद जिसके हृदय में मलिन वासना भर जाये । तो वह मनुष्य पशु अवतार लेकर वासना तृप्ति करता है । जब तक मनुष्य का अपने मन पर नियन्त्रण नही होता है । तब तक चौदह लोक पूरा ब्रह्मांड । तो भी पूर्ण नही होगा । मनुष्य जब मन के बस में हो जाता है । मन का गुलाम हो जाता है । तब कई हल्की प्रवृत्तियाँ उसमें पैदा हो जाती है । यह बात श्रीहरि ने अपने बाल्यास्था में देखे घटना के आधार पर बताये है।

इतनी वार्ता करने के बाद दयालु भक्तवत्सल भगवान भक्तो पर कृपा करके मलिन वासना टालने का उपाय बताये है । जिसे मलिन वासना दूर करना हो । उसे पवित्र देश, पवित्रकाल, पवित्र क्रिया और पवित्र लोगो का साथ करके सत्कर्म करना चाहिए । जो जीव सत्कर्म करता है । उसके पापकर्म क्षय हो जाते है । जिसे सेवा करने की आदत पड जाती है । उसका जन्मो-जन्मो का मलिन वासना तत्काल नाशप्राय हो जाती है । फिर ऐसे शुद्ध हृदय में भगवान के प्रति दृढ प्रेम हो सकता है ।

महात्मा तुलसीदासजी कहते है कि -

"राम तहाँ काम नही, काम तहाँ नही काम,
तुलसी दोनो नव रहे, रवि रजनी एक ठाम"

जहां पर विषय विषय वासना रहती है । वहाँ भगवान का निवास नही होता है । जहाँ पर भगवान का वास होता है । वहाँ पर विषय वासना का प्रवेश नही होता है । जिस प्रकार सूर्य और रात्रि एक साथ नही होते है । उसी प्रकार विषय वासना और भगवान की भक्ति नही रह सकती है।

इस लिये विषय वासना का त्याग करके भगवान की भक्ति करके जीव को मोक्ष प्राप्त करना चाहिए ।

•

कथा से कल्याण

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

प्राचीन समय की बात है । बात भी पुरानी है । फिर भी यह प्रेरणा प्रदान करने वाली कहानी है । एक राजा के अन्दर ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि हमारे यहाँ प्रतिदिन श्रीमद् भागवत की कथा हो । हमारी जय....जयकार होगी वे अपना विचार

मंत्री मंडल के सामने रख दिये । भागवत कथा के लिये कौन मना करे । सभी ने यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से मान्य कर दिया । तुरंत तैयारी प्रारम्भ हो गयी ।

कथा के लिये कथाकार से सभी प्रकार की बात पूर्ण की गयी । अच्छे दिन से कथा शुरु की गयी । प्रतिदिन शायं ७ से ८ बजे कथा की जाती थी । कथा में प्रतिदिन राजा, कर्मचारी एव प्रजाजन भाग लेने लगे । इस बात को लेकर प्रजा में राजा की प्रशंसा होने लगी । राजा धन्य है, कि उन्होने इस प्रकार की कथा की व्यवस्था किये है । राजा प्रशंसा सुनकर अत्याधिक खुश रहने लगे थे ।

स्थायी कथा होने के कारण कथाकार को अच्छे प्रमाण में दक्षिणा मिलने लगा । त्यौहार के दिन विशेष उपहार पदार्थ मिलने लगा था । अब कथाकार को किसी भी तरह की चिंता नही रह गई थी । कथा पूर्ण करने के वाद कथाकार थोडी राजा की प्रशंसा भी कर देते थे ।

समय अपना कार्य करता है । इस प्रकार दश वर्ष पूर्ण हो गये । राजा के लिये प्रशंसा और कथाकार के लिये दक्षिणा जीवन का नित्यकर्म बन गया था ।

एक दिन राजा के मन में विचार आया कि यही श्रीमद् भागवत की कथा सुनने से राजा परीक्षित का सात दिन में मोक्ष हो गया था । परीक्षित राजा थे । मैं भी राजा हूँ । मैं लगातार दश वर्ष से कथा सुन रहा है । मुझे कल्याण और मोक्ष का मार्ग कहाँ है ? यह मुझे ज्ञात नही है ।

दूसरे दिन कथा कहने से पूर्व, राजाने कथाकार से पूछे । आज कथा कहने से पूर्व हमारी शंका समाधान करे । यदि समाधान मिलता है तो कथा चालू रहेगी । नही तो आज से कथा बंद कर दी जायेगी । राजा बोले महाराजजी ! यही कथा परीक्षितजी सुने थे । उनका सात दिन में मोक्ष हो गया था । जब कि में दस वर्ष से कथा सुन रहा हूँ । तो मेरा मोक्ष ? मुझे इस शंका का समाधान चाहिए । नही तो कल से कथा बंद आप का मेहनताना बंद कर देगे ।

कथाकार जी घबरा गये । अब क्या होगा ! यदि समाधान नही मिलेगा तो मेरा पारिश्रमिक बंद हो जायेगा । राजाजी से ऐसा नही कह सकते की आप गलत है । अन्यथा जीवन से जाना पडेगा । कथाकार चिन्तित हो गये । राजा द्वारा दी गयी । पलंग गद्दे-भेट आज सब जह की तरह लगने लगा था ।

अपने पिता की ऐसी अवस्था को देखकर पुत्र अपने पिता से बोला-आप को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है । आप कल कथा कहने मत जाना । मैं कथा कहने जाउंगा । दूसरे दिन नियत समय पर कथाकार के स्थान पर उनका पुत्र बैठ कर भागवत पढने लगा । राजा बोले, आप के पिताजी क्यो नही आये है ? हमारे शंका का समाधान किये बिना आप कथा नहीं सुना सकते है । कथाकार के पुत्र ने कहा महाराज ! आप का प्रश्न गम्भीर है । यदि आप को इसका समाधान चाहिए तो मुझे कुछ समय तक अपनी सत्ता मुझे प्रदान करे ।

राजा समाधान चाहते थे । इस लिये बेटे के कथन पर कथाकार के पुत्र को सत्ता सौप दिये । सत्ता मिलते ही उसने आदेश दिया कि हमारे पिताजी को यहाँ लाया जाये । कथाकार आ गये । तुरंत दूसरा आदेश जारी किया कि हमारे पिताजी एवम् राजाजी को पेड के साथ रस्सी से बाँधदिया जाये । उसी प्रकार से कार्य किया गया । अब स्वादिष्ट पकवानो वाली थाल यहाँ पर लाई जाये । कुछ समय पश्चात स्वादिष्ट पकवानो वाली थाली आ गयी ।

जिस वृक्ष के साथ दोनो को बाँधा गया था । उन दोनो वृक्ष के मध्य में ताली रखवा दी गई । कथाकार के पुत्र राजा ओर पिता से बोले उस स्वादिष्ट पकवान का आप दोनो लोग भोग लगाये । दोनो लोग आश्चर्य चकित हो गये । और बोले हम दोनो बंधे है । कैसे भोजन कर सकते है । कथाकार के पुत्रने कहाँ हे राजन् ! हे पिताजी ! राजा की शंका और आपके समाधान का यही समाधान है । राजा ! और पिता दोनो लोग बँधे है । कौन किसको मुक्त कर सकता है । राजन आप अपने मान सम्मान और कीर्ति के स्वाद से बँधे है । और मेरे पिताजी कथा की आजिविका से बँधे है । कथा स्वार्थ के साधन के रुप में है ।

शुकदेवजी महाराज निस्पृही थे । वे बँधे नहीं थे । इसलिये परीक्षित को मुक्त किये थे । परीक्षितने अपनी वाहवाही नही स्वीकृत किये छे । संसार की मुक्ति के लिये परीक्षित कथा बैठाये थे । इस कारण से उनको मोक्ष प्राप्त हुआ ता । ऐसी उच्च भावना आप दोनो में नही है । इसलिये कल्याण की निश्चितता नही है । राजा को संतोषकारक उत्तर मिल गया । कथाकार के पुत्र को पुरस्कार राजाने दिया । और नई भावना के साथ कथा चालु हुई ।

इस लिये स्वामिनारायण भगवान जिसे कोई स्वार्थ नही हो । ऐसे निःस्वार्थी भक्तजनो के मुख से कथा सुनने की आज्ञा किये है । इस भवबंधन से सहजता से कल्याण हो जाता है ।

मित्रो ! यादृशी भावना यस्य सिध्धिर्भवति तादृशी - अर्थात् जिसकी जैसी भावना होती है । वैसे ही उसका फल मिलता है । इस लिये शुभ निष्ठा से किया गया कर्म बंधन से मुक्त करता है । और भगवान भी ऐसे शुभ कर्म को स्वीकार करते है ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भगवत प्राप्ति हो ऐसा अनुभव कैसे होता है ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग जो यह सत्संग करते है। यह भगवत प्राप्ति का मार्ग है। बाहरी जगत की जो यात्रा होती है। जब हम एक जगह से दूसरे जगह जाते है तो रास्ते में जो पथ्थर का लेख लगा होता है। अलग-अलग जहां पर जाने के लिये स्टेशन का नाम होता है। वहाँ पर दूरी किमी में लिखी होती है। इससे हमे ज्ञात हो जाता है। अपनी भगवत प्राप्ति की जो यात्रा है। इसमें कोई पत्थर का लेख आया कि नही ? कब पहुँचेगे ? इससे ज्ञान हो जाता है। यह कैसे ज्ञात होगा ? उसमें कुछ पडवा होता है। इसके उपर से संकेत मिल जाता है। उसकी प्रथम सीढी है।

(१) श्रध्धा : हमें अपने सीढी में संशय हो जाता है। मैं जिस भगवान की पूजा करता हूँ क्या श्रद्धा उनके द्वारा मुझे 'मोक्ष' प्राप्त होगा या नही ? क्या यही सच्चे भगवान है। जिस प्रकार माईल स्टोन देखकर यदि शंका करते है तो आगे की यात्रा संशय में पूर्ण होगी। आप रास्ते में लोगो से एक एक करके रास्ता के बारे में जानकारी प्राप्त करेगे। इसी प्रकार हमे मंदिर में भगवान के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। यदि शंका हो जाये तो वही पर ठहर जाना चाहिए। भगवान से ऐसा वंदन करगे कि यह तो हमारे उपर कृपा करे। तब हमारे अन्दर श्रद्धा का भाव जागृत होगा। यह तो ऐसी बात हुई परीक्षा बाद में देगे। परिणाम पहले प्राप्त करना चाहते हो। ऐसा नही होता है। पहले परीक्षा देना पडता है। बाद में परिणाम मिलता है। अब 'सत्संग' आता है।

(२) सत्संग : श्रद्धा आ जाने पर जानने की ईच्छा जागृत होती है। यह सत्संग के द्वारा पूरा होता है। श्रद्धा हो जाने के बाद क्या करे। यह ज्ञात करने के लिये मनुष्य सत्संग में आता है। यह सत्संग भी काफी कठिन है। यह सबको लाभ नही मिलता है। पूरे अहमदाबाद में कितने सत्संगि है। सबको ज्ञात है कि एकादशी की सभा होती है। क्योंकि ? कलियुग में बाहरी आकर्षण अधिक होता है। उसके तरफ सहज भाव से आर्कषित होता है। क्योंकि पहले का 'पुण्यानुबंध' होता है। और भगवान की कृपा भी होती है। इस लिये इस सत्संग में बैठ सकते है। भगवान की कृपा सबके उपर समान होती है। लेकिन जिसके पास पात्रता होती है। वही भगवान की कृपा प्राप्त कर सकता है। जैसा कि हम देखते है। बड़े अधिकारी नम्र होते है। लेकिन उनके सेवक गरम मिजाज वाले होते है। इसी प्रकार योग्य व्यक्ति ही सत्संग में बैठ सकता है। और वही लोग सत्संग मे आते है। इसमें भी दो प्रकार के सत्संगि होते है। (१) जिज्ञासु (२) पिषासु इस में जो जिज्ञासु होता है। उसे सत्संग के बारे में, धर्म के बारे में, सम्प्रदाय के बारे में जानने की ईच्छा होती है। पुण्य वाले पिपासु होते है। उन्हें जानने से अधिक अनुभव में रुचि होती है। भगवत रस पान की प्यास होती है। उसे वह क्रिया में लाता है।

(३) भजन : सत्संग में आने के बाद जब ज्ञान मिल जाता है। तो उसका मन भजन में लगता है। भजन करने से अपना अंतकरण भगवान के साथ जुडता है। अन्तरमन का भाव सदैव शुद्ध रखने का प्रयास करता है। लोग कहते है भगवान सब कुछ देखते है। इसी प्रकार सब कुछ लिखा जाता है। अंतर का भाव पुस्तक में लिखा जाता है। अन्तर के भाव के कारण हम कर्म से जुडते है। कई बार जब हम मनुष्य के गले लगते है। तो मन में आता है कि यह सब दिखाई दे रहा है। न करने पर खराब लगता है। लेकिन अंतर से ऐसा लगता है कि इसे थप्पड से मार दे। इस दृश्य में भगवान के सामने आप यह कृत्य कर दिये है। लेकिन बाहर के लोगो को लगेगा। आप प्रेम से मिल रहे है। मन के भाव को लिख लिया जाता है। इस लिये अन्तर का भाव अवश्य शुद्ध रखें।

(४) आत्मराग से निवृत्ति : भगवान की भजन से अन्तःकरण शुद्ध होता है। जितने अंश अवगुण दूर होते है। उतने भगवान के करीब होते जाते है। भगवान से जुडने पर शुद्धता आती है। अन्तःकरण शुद्ध होने में समय लगता है। क्योकि जन्म-जन्मान्तर की आसक्ति साथ रहती है। यह दो-तीन दिन में नही होता है। धैर्य रखना पडता है। जिस प्रकार अनाज जमीन बोने के कुछ दिनो के बाद अनाज देता है। उसी तरह इसमें भी समय लगता है।

(५) निष्ठा : जैसे-जैसे अन्तःकरण शुद्ध होता है। वैसे भगवान के प्रति विश्वास दृढ होने लगता है। भगवा के प्रति समर्पण का भावल जगता है। एक प्रचलित उदाहरण है। एक बड़ा जहाज समुद्र में जा रहा था। सागर में तूफान आ गया। सभी का मन अशांत हो गया था। लेकिन नाविक एकदम शांत

चित्त भाव से पड़ा था । नाविक की पत्नी पूछी आप को कुछ हुआ ? तो नाविकने उत्तर दिया कुछ नही हुआ । नाविक पूछा क्यो ? पत्नी बोली आप हमारे पति है जो करेगे उचित हो करेगे । नाविक बोला मुझे भी ईश्वर में विश्वास है । मैं भगवान के प्रति सर्मपित हूँ । तो भगवान हम सभी की रक्षा अवश्य करेगे । यदि कुछ होगा भी तो मुझे दुःख नही होगा ? भगवान जो कुछ करेगे हमारे हित में होगा ।

(६) रुचि : विश्वास बढ जाने पर रुचि आती है । भगवान के प्रति समर्पण भाव आ जाने पर भगवत क्रिया करने में मन लगता है । सत्संग के प्रति रुचि बढती है । संसार की वस्तुए कम अच्छी लगती है । जिसे माया का रोग लगा रहता है । उसे भगवान सम्बन्धी कार्य खराब लगता है । कई बार बुखार आने पर भोजन कडवा लगता है । जैसा स्वाद आना चाहिए वैसे नहीं आता है । उसी प्रकार आत्माने 'भवरोग' लगा हो तो तब भगवान सम्बन्धी रस लगा हो तो भी कडवा लगता है । संसार सम्बन्धी वस्तुए प्रिय लगे तो समझ जाना चाहिए । हमारी आत्मा रोगी है । आत्मा निरोगी होने पर संसार की वस्तुए जहर जैसी लगती है । ऐसा अनुभव आने पर भगवान के प्रति लगाव बढता है । यह सीढी मिल जाने के बाद भगवान में आसक्ति के बाद मन स्थिर हो जाता है । उस अवस्था में भगवान के सिवाय कोई दिखाई नही देता है । हम सभी को संसार में कहने वाले अधिक लोग मिल जाता है कि इतना मंदिर में क्यो जाते है । सत्संग में अधिक जाते है । घर परिवार पर ध्यान दे । हम लोग तो अज्ञान रुपी नींद में सोये ही है । फिर उसमें कोई लोरी गाने वाला मिल जाय । तो अज्ञान रुपी नीद गहरी रो जाती है । जिस प्रकार आप जगत से जुडे है । उसी प्रकार भगवान में जुड जाने के बाद आफ का मन भगवान में लगा रहेगा ।

(७) अनुभूति : भगवान में इस तरह जुड जाने के बाद आपको अनुभव होगा कि हमे ''भगवतप्राप्ति'' हो गयी है । सूर्योदय से पहले सूर्य का आना पता चल जाता है । इसी प्रकार अपना अन्ताकरण शुद्ध होने पर उसके लक्षण दिखाई देने लगते है । अन्दर शांति का अनुभव होने लगता है । एक बार अन्दर की शांति मिल जाने पर बाह्य अशांति आप को विचलित नही कर सकता है । जैसे क्रोधदौ प्रकार का होता है । एक क्रोधस्वयं के उपर प्रबाव डालता है । दूसरा क्रोधदूसरे को सुधारने के लिये होता है । महापुरुषो का क्रोधदूसरो को सुधारने के लिये होता है । वह स्वयं पर प्रभाव नही डालता है । ऐसा अनुभव होने पर भी आप को भगवत प्राप्ति नही हुई तो भी आप समीप आ चुके है । भगसागर में है । लेकिन पार नही उतरे है । जिस प्रकार सागर में नाव ९०% दूरी तय करली हो । किनारे आने में १०% की दूरी शेष हो । तो नाव से कूदते नही है । कूदने पर डूब जाने का भय होता है । सब कुछ बेकार हो जायेगा १०% में भी प्रयास जारी रखना चाहिए । तथा पतवार को चलाना चाहिए । भगवान तक साधन-चालु रखना चाहिए । ईमानदारी से भजन करेगे तो भगवान तक अवश्य पहुचेगे । प्रयत्न करने से सब कुछ सम्भव होता है । अपने लिये तो अधिक सम्भव है । क्योंकि हम लोगो की 'नरनारायणदेव' मिले है । जो सभी को नही मिले है । हम लोगो का सब कुछ पूर्ण करते है । जो चाहे वह प्राप्त होता है । यदि नही प्राप्त हो रहा है तो इसके पीछे कोई कारण अवश्य होगा । जैसे लोहे को सोना बनाना हो तो पारसमणी से स्पर्श कराना पडता है । उसी प्रकार जब तक अपना सम्बन्धभगवान तक न हो तब तक प्रयास करते रहना चाहिए ।

•

विवेकपूर्ण वाणी

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

जिसकी भाषा में सम्भयता होती है । उसके जीवन में भव्यता आ जाती है । मनुष्य का हृदय कॉच के समान होता है । जरा सी चोट लगने पर टूट कर बिखर जाता है । इस लिये वाणी का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए । लेकिन मनुष्य वाणी बेकार कर देता है । इस कारण से मनुष्य का तेज और शारिरीक बल कम हो जाता है । जीभ स्वाद के कारण पेट बिगाड देती है । और व्यवहार में भी अवरोधला देती है । विवेक हीनता से बोलने पर महाभारत हो जाता है । प्रभुने हमे एक जीभ तथा दो कान दिये है । अर्थात् दो कान से सुने और उसका आधा बोलना चाहिए । लेकिन आदमी सुनता कम है बोलता अधिक है । वह अधिक प्रलाप करता है । कम बोलने से अधिक लाभ मिलता है । फूल मौन रहकर सुगंधप्रदान करता है । आप की बोली दूसरे को अच्छी लगती है । कि नही आप अवश्य मूल्यांकन करे । व्यवहार और वाणी पर नियन्त्रण रखने से जीवन के अनेक कष्ट स्वयं दूर हो जाते है । कुछ लोग बोल-बोल कर अपना सम्मान को देते है । कई आदमी दिन भर कुछ न कुछ बोलते ही रहते है । विना कारण ही बीच में बोल देते है । वह क्या बोलते है । उन्हे खुद पता नही चलता है । उनके बोलने से सामने वाले व्यक्ति को कष्ट होता है । इसका भी उसे ज्ञान नही होता है । पारिवारिक सम्बन्धसच्ची वाणी से नही अच्छी वाणी से सुधरता है । ''सत्यम् वद प्रियं वद'' वाणी सत्य और प्रिय होनी चाहिए । कान में विष गया व्यक्ति को तिल-तिलक रके मारता है । लेकिन पेट में गया विष मानव को तत्काल मार देता है । जीवन में सुखी रहना हो तो पानी छान कर पिये । और वाणी विवेक से बोलना चाहिए ।

शब्द ब्रह्म है । वाणी की उत्पत्ति शब्द द्वारा होती है । शब्द और वाणी एक दूसरे के पूरक है । यदि शब्द नही होता तो वाणी भी नही होती । प्रत्येक अवाज में शब्द सुनाई देता है । प्राणीयो के

पास वाणी नही होती है । लेकिन उनकी आवाज में शब्द का भाव आधा है । मनुष्य के पास वाणी है । और शब्द भी है । दोनो व्यवत करने की समझ है । महापुरुषो और संतो की वाणी हमें आकर्षित कती है । क्योकि वे लोग मौन का पालन करते है । मौन में आश्चर्य की शक्ति होती है । मौन द्वारा पूरी ईन्द्रियो पर नियन्त्रण रखते है । असीम शक्ति मिलकर वाणी को शब्दो को ब्रह्म बना देती है । इस कारण से संतो की वाणी आम मानव से शक्तिशाली होती है । मौन में आश्चर्यजनक शक्ति होती है । मौन शरीर के अंगो को सशक्त बनाते है । प्राणीयो को कोई पोषक युक्त भोजन नही मिलता है । उसमें बल अधिक होता है । मनुष्य में कम पाया जाता है । उसका कारण अपने को शांत रखना है । मौन के लिये एकान्त की आवशयता नही होती है । शब्दो को ओष्ठ के अन्दर सिलकर रखे । समाज के बीच रहकर वाणी को नियंत्रित कर सकते है । कुछ लोगो की गलत बोलने की आज्ञा हो जाती है । जिसे वह रोक नही पाते है । जीभ में हड्डी नही होती है । हम जैसा गति देगे बह वैसा ही करेगी । प्रभुने आँख-कान को खुला रखे है । ३२ दाँत जीभ के रखवाले है । तथा ओष्ठ रुपी दरवाजे से बंद रखे है । फिर भी शांत स्थिर नही रहती है । इस लिये समझकर बोलना चाहिए । और सत्य प्रिय हितकर बोलना चाहिए । आत्यन्तिक कल्याण प्राप्त करने वाले को बराबर नियन्त्रित रहना चाहिए ।

जीभ के द्वारा कई शब्द बोल सकते है । लेकिन जीभ तो मुख में समजाती है । मार शरीर और गाल पर ही पडती है । जीभ से बोले गये शब्द मनुष्य को बडे कष्ट में लाकर रख देता है । महाभारत में एक अवसर आता है । मयदानव ने इन्द्रप्रस्थ में सभा स्थल को इस प्रकार का बनाये थे । कि जहाँ पर जल हो वह स्थल दिखे । जहाँ स्थल वहाँ पर जल दिखाई देता था । उसे देखने के दुर्योधन आये थे । जल वाली जगह को स्थल समझकर उसके उपर चलने लगे । जिस कारण से जल कुंड में गिर ये । तथा उनका वस्त्र गीला हो गया था । उस समय द्रौपदी झरोखा में बैठकर वह दृश्य देख रही थी । और हस कर कही अंधे के अंधे ही होते है ? यह शब्द दुर्योधन को ह्रदय में काँटे की तरह चुभ गया था । दुर्योधन में अपमान का बदला लेने का भाव पैदा हो गाय । समयोपरांत कपट से पांडवो को द्युत मे हराकर द्रौपदी से भरी सभा में अपमान का बदला लिया था । दुशासन के द्वारा भरी सभा में द्रौपदी का चीर हरण करवाया था । इसका मुख्य कारण कठोर वाणी ही है ।

वाल्मिकी रामायण के ४५ सर्ग में एक श्लोक आता है । राम मारीच को मारने गये । और उन्होने उसे बाण भी मारा । इस कारण से लक्ष्मणजी को राम की सहायता के लिये जाना पडा था । इस ब्रह्मांड में राम को पराजित करने की शक्ति किसी में भी नही थी । यह आवाज मायावी मारीच की थी । इस लिये आप चिंता मत करें । लक्ष्मण की बात सुनकर सीताजी क्रोधित हो बोली है लक्ष्मण आप जैसा क्रूर और गुप्त विचार वालो में अंदर पाप भरा रहता है । आप दुष्ट आत्मा है । आप मेरे प्रति कामवासना की भावना रखकर आये हुए है । मैं गोदावरी नदी में डूब के मर जाउगी । या तो पर्वत से कूद जाउगी । लेकिन आप कांचयन नही करुँगी । सीताजी की ऐसी कठोर वाणी सुनकर लक्ष्मणजी रोने लगे । और राम के पास गये । परिणाम यह हुआ कि रावण आकर सीता का हरण कर लिये थे । अधिक दुख सहन करना पडा था । मधुर वाणी से सभी कार्य पूर्ण हो जाता है । स्वामी विवेकानंद अमेरिका गये । वहाँ पर प्रवचन करते समय प्रथम शब्द अंग्रेजी में बोले थे । भाई ब्रधर्स एन्ड सिस्टर्स, मेरे भाईयो और बहनो । इतने दो शब्दो के कारण अमेरिका के लोग ताली बजाकर सम्मान किये थे । यह मधुर वाणी का प्रभाव है । एक कवि ने कहा है ।

शब्दोना मार्या मरी गया शब्दे छोड्या राज
जेने शब्द विचारिया, तेना सरीया काज

शब्दो की भार से कई मनुष्य मर जाते है । कुछ फाँसी लगा लेते है । कुआँ में गिर जाते है । जहर खा लेते है । अग्निदाह कर लेते है । इस तरह मर जाते है ।

एक गाँव में लाखा नाम के दरजी रहते थे । वह एक पटेल के घर कपडा सिलने गये थे । पटेलने उस दर्जी को बैगन दिये । लाखा ने पटेल के लडके से कहा कि यह बैगन हमारे घर पर दे दो । और अपने काकी से कहना कि आज दोपहर को पूरा बैगन की सब्जी बनाये । बच्चा घर जाकर दर्जी की औरत से इस बात को कहा । लेकिन दर्जी को औरत दूसरी सब्जी बना दी थी । दोपहर में लाखा बैगन की सब्जी को याद करते हुए घर खाने के लिये आया । भोजन करने बैठा उसे थाली में बैगन की जगह भिंडी की सब्जी मिली थी । लाखाने कहा बैगन की सब्जी नही बनाई है क्या ? डंडा लेकर स्त्री को मारने लगा । और बोला दुष्ट हमारे कहने पर भी कार्य नही की तो जा पटेल के कुए में डूबकर मर जा । मुझे अपना मुह मत दिखाना । दर्जी की औरत क्रोधित होकर पटेल के कुए में कूद कर जान दे दी । पटेल को सूचना मिली उसने पुलिस बुला दिया । लाखा के उपर केस हो गया । लाखा मुंबई में बारह साल तक जेल वास में रहा था । कठोर वाणी के यह परिणाम होते है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में अधिक आश्विन मास के उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से उसी प्रकार कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजीकी प्रेरणा-मार्गदर्शन से अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रति तीन वर्ष में आने वाले पुरुषोत्तम मास को उल्लास पूर्वक मनाया जाता है।

वर्ष भर आने वाले अपने व्रत, उत्सव, पाटोत्सव, रामनवमी, श्रीहरि का प्रागट्य दिन, फूलदोलोत्सव, वसंत पंचमी, दिपोत्सव, श्री हनुमान जयंती, हिंडोला, हिमालय दर्शन आदि उत्सवो का कार्यक्रम अपने मंदिर में किया जाता है। इस वर्ष कोरना के कारण जो संकट काल भी है। फिर भी इस वर्ष प.पू. आचार्य महाराजश्री के आदेश एवम् सूचनानुसार अधिक मास सादगी पूर्ण मनाया गया। फिर भी कुछ भावना प्रधान हरिभक्त यजमान बनकर श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल की कृपा पाये थे । जिसमें अधिक मास आसो सुद-३ ता. १९-९-२०२० को श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव अभिषेक ब्रह्मचारी पूजारी संतोने वैदिक रुप से पूर्ण किये थे । श्री नरनारायणदेव को अलौकिक सुंदर विविधभोजन बनाकर अन्नकूट मनाये थे । इसके यजमान प.भ. मंदाबेन गोविंदभाई स्वामिनारायण परिवार रहा था।

आसो सुद-५ वसंत पंचमी हवेली में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक, अन्नकूट किया गया था । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद प्रेरणा से इसके यजमान प.भ. शारदाबा शेलत ह. प.भ. के.पी. शेलत साहब का परिवार लाभ लिया था।

ता. २२-९-२०२० कुंजगली दर्शन आसो सुद-९ अक्षरभवन में बिराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक और दिव्य अन्नकूट किया गया था । सर्वोपरी श्री घनश्याम जन्मोत्सव जिसके यजमान प.भ. लालजीभाई सोनी हरिदर्शन परिवार के लोग थे । ह. पार्षद नरोत्तम भगत (मूलीवाला) आसो सुद-१२ ता. २८-९-२०२० श्री रंगमहल बिराजमान सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक और सुंदर अन्नकूटोत्सव विधीवत रुप से मनाया गया था । जिसके यजमान प.भ. शैलेषभाई भावसार परिवार था । आसो वद-१ केसर स्नान के यजमान श्री प.भ. शैलेषभाई भावसार का परिवार था । ता. १५-१०-२०२० शिवरात्रि पूजन, हनुमानजी पूजन, और १६-१०-२० को अन्नकूट गोवर्धन पूजा इत्यादि के यजमान प.भ. शैलेषभाई भावसार परिवार था।

नृसिंह जयंती, शरदोत्सव, जन्माष्टमी, नंद महोत्सव आदि साधारण रुप से मनाया गया। सभी हरिभक्त अपने घर पर बैठकर अपने मंदिर की साईट के उपर और यु-ट्युब पर दर्शन करके धन्य हुए। (कोठारी स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर अधिक मास का पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के महंत शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अधिक मास का पाटोत्सव अधिक आसो सुद०५ को ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आदि विधिवत रुप से पूर्ण किया गया था । सभी हरिभक्त ओनलाईन दर्शन करके धन्य हुए थे।

(कोठारी स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

सास्काटून श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर प्रथम पाटोत्सव (कनाडा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से कनाडा स्थित सास्काटून आई.एस.एस.ओ. स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर का पहला पाटोत्सव ता. १२ सीतम्बर २०२० को उल्लास के साथ मनाया गया।

पाटोत्सव के अवसर पर ता. ११ सितम्बर २०२० शुक्रवार के दिन सामूहिक पूजा की व्यवस्था की गयी थी। यजमान परिवार महापूजा का सुंदर लाभ लिये थे।

१२ सितम्बर २०२० शनिवार को प्रथम आरती करने के बाद भगवान का षोडशोपचार पूजन विधिके बाद अभिषेक किया गाय था। पाटोत्सव के यजमान परिवार द्वारा पूजन विधिकी गयी थी . इसके बाद युवकोने अच्छे से कीर्तन किया था। भगवान की कृपा प्राप्त किये। सास्काटून की सभा का प्रदर्शन प्रारम्भ से लेकर प्रथम पाटोत्सव तक प्रोजेक्टर द्वारा विडियो बनाकर दिखाया गया था। प.पू. आचार्य माराजश्री का आशीर्वाद ओनलाईन किया गया था। छप्पन भोग और अन्नकूट आरती करके प्रसाद वितरण किया गया थआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम ओनलाईन हुआ था। कोरोना वायरस के कारण सोश्यल डिसटेन्स बनाकर सम्पूर्ण पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस में विशेष करके मंदिर में नित्य पूजा तथा थाल की सेवा देने वाले सभी हरिभक्त तथा युवा हरिभक्त ने सुंदर सेवा दिये थे। भगवान श्रीहरि उनके उपर अति खुश है ऐसी प्रार्थना है। सभी हरिभक्तोने तन, मन और धन से सुंदर सेवा दिये थे। (सास्काटून (कनाडा) मंदिर)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण		रसोई
चुरमाकालड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,०००/-	
मालपूवा	रु. २,०००/-	रु. ११,०००/-
खीरपूरी	रु. २,३००/-	रु. १२,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. ११,०००/-
शीखंड पुरी	रु. २,५००/-	रु. १७,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. २,७००/-	रु. १७,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. २,७००/-	रु. १४,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ३,३००/-	रु. १२,०००/-
मैसुब	रु. ३,५००/-	रु. १२,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. १७,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. २,५००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु. ५,००१/- तथा रु. १०,०००/-

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

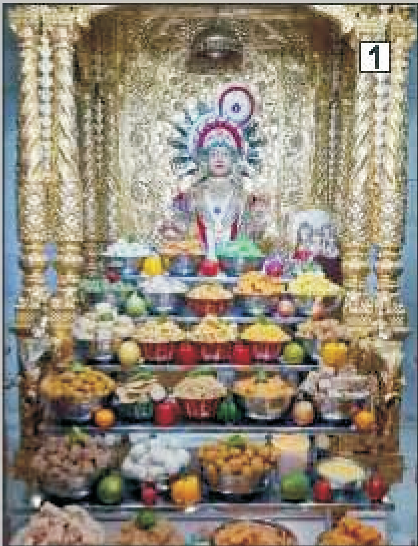

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर (बहनो की हवेली) में अधिक मास पर अन्नकूट दर्शन। (२) गांधीनगर से.-२ में अधिक मास के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (३) अपने नारायणपुरा मंदिर में अधिक मास पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट का दर्शन। (४) सास्काटून (केनेडा) मंदिर के प्रथम पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (५) धरियावद (राजस्थान) मंदिर में कोरोना मुक्त विश्व के लिये १२ घंटे की धून करते संत हरिभक्त गण।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो का अधिक मास के सुंदर अन्नकूट दर्शन,
अपने मंदिर के पास रिलीफ रोड पर भव्य दरवाजे का उद्घाटन करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

कोरोना के समय में दर्शन के लिये मंदिर खोलने की तारीख कुछ दिनो में अवगत की जायेगी ।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है। http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Khamar